

अयोध्या संपूर्ण परिचय: क्या आप भी रामलला के दर्शन के लिए जाने वाले हैं अयोध्या तो यह खबर आपके काम की है, इसे बिना पढ़े न जाएं

आप भी अयोध्या जाकर रामलला के दर्शन करने का प्लान बना रहे हैं तो दैनिक जागरण की अयोध या संपूर्ण परिचय में आपको पूरी जानकारी मिलेगी। इसमें अयोध्या पहुंचने से लेकर ठहरने रामलला के दर्शन-आरती करने से लेकर शहर और आसपास के सभी तीर्थ स्थल घूमने तक में मदद करने वाली सूचना दी गई है।

आप राम की नगरी अयोध्या जाने की योजना बना रहे हैं? अगर हां, तो दैनिक जागरण की 'अयोध्या संपूर्ण परिचय' में आपको मिलेगी वहां की पूरी जानकारी। इस बुकलेट में आपके उपयोग की सभी सूचनाएं एकसाथ दी गई हैं। अयोध्या पहुंचने, ठहरने, रामलला के दर्शन-आरती करने, शहर और आसपास के सभी तीर्थस्थल घूमने में भी इससे आपको सहायता मिलेगी।

अयोध्या कहाँ है ?
अयोध्या उत्तर प्रदेश का एक जिला है, जो सरयू नदी के तट पर बसा है। यह राज्य की राजधानी लखनऊ से करीब 130 किलोमीटर और देश की राजधानी दिल्ली से 668 किलोमीटर दूर है। अयोध्या चार जिलों बस्ती, गोंडा, सुल्तानपुर और बाराबंकी से घिरा हुआ है।

रामलला के दर्शन
राम मंदिर कब खुलता है ?
सुबह- 7.00 बजे से 11.30 बजे तक
दोपहर- 2.00 से शाम 7.00 बजे तक (समय में परिवर्तन संभव)

राम मंदिर में दर्शन कैसे होंगे ?
परिसर के मुख्य प्रवेश द्वार से राम मंदिर की दूरी लगभग 200 मीटर है। यहां से मंदिर तक पहुंचने के लिए वृद्धजनों और दिव्यांगों के लिए व्हीलचेयर की सुविधा उपलब्ध है। आपको सिंह द्वार होते हुए 32 सौंदर्यां चढ़कर राम मंदिर में प्रवेश मिलेगा। इसके बाद आप पांच मंडप पार करके गर्भगृह तक पहुंचेंगे, जहां 30 फीट की दूरी से आप रामलला के दर्शन कर सकेंगे।

रामलला की आरती का समय क्या है ?
मंगला आरती- सुबह 4.30 बजे
श्रृंगार आरती- सुबह 6.30 से 7.00 बजे
भोग आरती- 11.30 बजे
मध्याह्न आरती- दोपहर 2.00 बजे
संध्या आरती- शाम 6.30 बजे (समय में परिवर्तन संभव)
रामलला (बालक राम) के VIP दर्शन और मंगला व श्रृंगार आरती के लिए श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने अभी किसी व्यवस्था की घोषणा नहीं की है। रामभक्त श्रृंगार, भोग और संध्या आरती में शामिल हो सकते हैं।

भगवान राम दिन में ढाई घंटे (दोपहर 12 से 2:30 बजे तक) विश्राम करेंगे। इस दौरान गर्भगृह के कपाट बंद रहेंगे।

आरती में कैसे शामिल हो सकते हैं ?
ऑफलाइन पास की व्यवस्था: आरती में शामिल होने के लिए ट्रस्ट नियम तय कर रहा है। अभी ट्रस्ट की ओर से पास दिया जाता है। यह पास अभी ऑफलाइन श्रीराम जन्मभूमि कैप ऑफिस से मिलता है। इसके लिए आईडी प्रूफ देना अनिवार्य है।

ऑनलाइन व्यवस्था: www.srjbtkshetra.org पर जाकर ऑनलाइन पास के लिए रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं। हालांकि अभी यह व्यवस्था चालू नहीं हुई है। जल्द ऑनलाइन पास लेने की व्यवस्था भी शुरू होने की संभावना है। इसके बाद आप ऑनलाइन पास ले सकेंगे।

वीआईपी दर्शन की क्या व्यवस्था है ?
रामलला के दर्शन के लिए वीआईपी दर्शन की कोई आधिकारिक व्यवस्था, टिकट या शुल्क नहीं है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट अभी व्यवस्थाएं तय कर रहा है।

मंदिर में प्रसाद कहाँ और क्या मिलेगा ?
राम मंदिर में भक्तों को 'इलायची दाने' का प्रसाद मिलेगा। यह चीनी और इलायची को मिलाकर बनाया जाता है। मंदिर परिसर में ही भक्तों के लिए नि:शुल्क प्रसाद की व्यवस्था है। भक्तों को प्रसाद बांटने के लिए मशीनें लगाई गई हैं। ये मशीनें परिसर में दर्शनार्थियों की वापसी के रास्ते पर स्थापित हैं। अभी शुल्क के साथ प्रसाद की कोई व्यवस्था नहीं है।

चढ़ावे के लिए प्रसाद ले जा सकते हैं ?
भक्त भी विशेष अनुमति से शाकाहारी, शुद्ध मिठाई और मेवे आदि का भोग लगवा सकते हैं। सुरक्षा कारणों से रामलला के मंदिर में भगवान को अर्पित करने के लिए नारियल, फूल माला, श्रृंगार अथवा अन्य सामान भक्त नहीं ले जा सकते हैं।

मंदिर के अंदर क्या ले जा सकते हैं ?
रामलला दर्शन के समय आप अंदर केवल रुपये और चरमा जैसी कुछ जरूरी चीजें ही ले सकते हैं। बाकी सामान रखने के लिए दर्शन मार्ग पर लॉकर की सुविधा की गई है।

अयोध्या कैसे पहुंचें ?
अयोध्या पहुंचने के लिए सड़क, वायु एवं रेल मार्ग की व्यवस्था है।

हवाई मार्ग: अयोध्या का हवाई अड्डा महर्षि वाल्मीकि इंटरनेशनल एयरपोर्ट अयोध्या धाम, मंदिर से 10 किलोमीटर की दूरी पर है। इसके अलावा अयोध्या से नजदीकी हवाई अड्डों के नाम एवं दूरी इस प्रकार हैं:

गोरखपुर एयरपोर्ट (अयोध्या से 118



किलोमीटर)
लखनऊ एयरपोर्ट (अयोध्या से 125 किलोमीटर)
प्रयागराज एयरपोर्ट (अयोध्या से 172 किलोमीटर)
वाराणसी एयरपोर्ट (अयोध्या से 224 किलोमीटर)
अयोध्या के लिए उपलब्ध विमान सेवाएं
कई एयरलाइन दिल्ली-मुंबई और बंगलुरु समेत देश के कई शहरों से सीधे अयोध्या के लिए फ्लाइट्स का संचालन कर रही हैं। यहां देखिए...

स्पाइसजेट और एयर इंडिया दिल्ली-मुंबई समेत देश के कई शहरों से सीधे अयोध्या के लिए फ्लाइट्स का संचालन करेंगी। यहां देखिए फरवरी से शुरू होने वाली विमान सेवाएं...

रेल मार्ग से ऐसे पहुंचें अयोध्या
देश के बड़े शहरों से अयोध्या पहुंचने वाली कुछ प्रमुख ट्रेनें और उनका समय...

प्राणप्रतिष्ठा रू पेशल ट्रेन
रेलवे ने देश के विभिन्न हिस्सों को अयोध्या से जोड़ने वाली 1,000 से अधिक विशेष ट्रेनें चलाई हैं। ये ट्रेनें 19 जनवरी से 100 दिनों तक चलाने की योजना है। इन ट्रेनों के बारे में आप अपने शहरों से पता कर सकते हैं। रेलवे की दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, बंगलुरु, पुणे, कोलकाता, नागपुर, लखनऊ, जम्मू और कश्मीर सहित अन्य शहरों से भी ट्रेन चलाने की योजना है।

सड़क मार्ग
रामनगरी अयोध्या जाने के लिए लगभग सभी बड़े शहरों से सड़क मार्ग से कनेक्टिविटी है। अयोध्या धाम आप अपने वाहनों से भी जा सकते हैं और सरकारी व निजी बसों से भी। दिल्ली से अयोध्या के लिए उत्तर प्रदेश सरकार की UPSRTC की बस सेवा भी उपलब्ध है।

उत्तर प्रदेश के शहरों से दूरी व यात्रा का समय
उत्तर प्रदेश के इन प्रमुख पर्यटन शहरों से भी अयोध्या के लिए टैक्सी और बसें आसानी से उपलब्ध हैं...

अपने वाहन से अयोध्या जाने पर
यदि आप अपने वाहन से अयोध्या जा रहे हैं तो मंदिर से पहले हनुमानगढ़ी और कनक भवन का मार्ग संकरा होने के कारण येलो जोन से होते हुए जाना होगा। शेष पूरे अयोध्या में आपको कहीं भी कोई दिक्कत नहीं आएगी। रामनगरी के सभी प्रवेश मार्गों पर वाहन पार्किंग स्थल बनाए गए हैं। इसके अलावा, शहर में एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए टैक्सी की व्यवस्था भी है।

अयोध्या में कहाँ रुक सकते हैं ?
अयोध्या धाम में रामलला मंदिर के पास पांच किलोमीटर के दायरे में रुकने के लिए बहुत सारे होटल व होमस्टे हैं। इसके साथ ही अयोध्या में ठहरने-रुकने की व्यवस्था लगातार बढ़ रही है। पढ़िए राम मंदिर के आसपास ठहरने के मौजूद चुनिंदा स्थानों के बारे में...

पांच से सात किलोमीटर के दायरे में ये होटल भी हैं
अयोध्या धाम में पंचशील होटल, शान-ए-अवध होटल, कृष्णा होटल, तारा जी रिजॉर्ट भी है। इनका किराया एक हजार से लेकर 10 हजार तक है। यह सभी राम मंदिर से 5 से 7 किलोमीटर दूरी पर हैं।

क्या अयोध्या में शाकाहारी भोजन मिलेगा ?
लागभग पूरी अयोध्या शाकाहारी है। यहां कई होटलों और रेस्तरां में बिना प्याज और लहसुन से बना खाना भी मिलता है। जो लोग लहसुन-प्याज नहीं खाते हैं, वे लोग जानकी महल और जैन

धर्मशाला में भोजन कर सकते हैं, यहां बिना प्याज और लहसुन का भोजन मिलता है।

अयोध्या में प्रमुख दर्शनीय स्थल कौन-कौन से हैं ?
अयोध्या में रामलला के दर्शन करने के साथ ही भगवान राम से जुड़े और भी कई स्थान हैं। इन स्थानों पर भगवान राम के चिह्न मौजूद हैं।

ये सभी तीर्थस्थान राम मंदिर के आसपास ही हैं...

1- हनुमानगढ़ी- राम मंदिर से दूरी 500 मीटर
महत्व- रामलला के दर्शन करने से पहले हनुमान मंदिर दर्शन करने की परंपरा रही है। मंदिर में जो मूर्ति है, उसमें हनुमान जी मां अंजनी की गोद में हैं।

खुलने का समय- सुबह 4.00 बजे से रात 10.00 बजे तक

2- छोटी देवकाली- राम मंदिर से दूरी एक किमी

महत्व- यह मां सीता की कुलदेवी का मंदिर है। इसकी मान्यता है कि उन्होंने यहां माता पार्वती की प्रतिमा स्थापित की थी और वे यहां पूजा करने आती थीं।

खुलने का समय - सुबह से रात तक।

3- कनक भवन- राम मंदिर से दूरी एक किमी
महत्व- रानी कैकेयी ने राम और सीता को यह भवन उपहार में दिया था। यह उनका व्यक्तिगत महल था। साल 1885 में ओरछा रियासत की महारानी

वृषभानु कुंवरि जूदेवी ने वर्तमान भवन का निर्माण करवाया था। मंदिर के मुख्य गर्भगृह में श्रीराम और माता सीता की प्रतिमा स्थापित है।
खुलने का समय - सुबह 9.00 बजे से दोपहर 11.30 बजे तक और शाम 4.30 से रात 9.30 तक।

4- सीता रसोई- राम मंदिर से दूरी एक किमी
महत्व - राम जन्म भूमि के उत्तर-पश्चिमी किनारे पर स्थित सीता की रसोई एक प्राचीन रसोई है। मां सीता इसका उपयोग किया करती थीं।

खुलने का समय - सुबह से रात तक।

5- सरयू तट- राम मंदिर से दूरी दो किमी
महत्व - अयोध्या में 14 प्राचीन घाट हैं। हर घाट से जुड़ी कुछ प्राचीन मान्यताएं हैं। पर्व के समय इन घाटों पर भक्त पवित्र स्नान करने जुटते हैं।

6- सरयू पर शाम की आरती
भगवान राम की नगरी अयोध्या में सरयू तट पर शाम की आरती 6 से 7 बजे के बीच में होती है।

7- नागेश्वरनाथ महादेव दर्शन 2 किमी दूर

महत्व- भगवान शिव को समर्पित यह मंदिर राम की पैड़ी पर स्थित है। इसकी मान्यता है कि इसका निर्माण श्रीराम के छोटे पुत्र कुश ने करवाया था।

8- मणिराम दास छावनी- राम मंदिर से एक किमी दूर

महत्व- इस मंदिर में आमने-सामने दो हवेलियां हैं। यहां के वाल्मीकि जी भवन की दो मंजिला की दीवारों पर संपूर्ण वाल्मीकि रामायण अंकित है।

9- रामलला सदन- राम मंदिर से एक किमी दूर

महत्व- अयोध्या में यह पहला ऐसा मंदिर है, जिसे द्रविड़ शैली में बनाया गया है। यह भगवान श्रीराम के कुलदेवता भगवान विष्णु के स्वरूप भगवान रंगनाथन का मंदिर है।

10- दशरथ महल- राम मंदिर से 700 मीटर दूर

महत्व- राजा दशरथ ने यह महल बनवाया था। हालांकि बाद में इसका कई बार जीर्णोद्धार हुआ। यहां भगवान राम, माता सीता, लक्ष्मण और भरत की मूर्तियां हैं।

11- रंग महल- राम मंदिर से एक किमी दूर
महत्व- इस मंदिर के संत खुद को सीताजी की सखी मानते हैं। मान्यता है कि विवाह के बाद इस मंदिर में माता सीता की मुंह दिखाई की रस्म हुई थी।

अयोध्या के पास के चार तीर्थ

स्थान महत्व अयोध्या से दूरी
भरत कुंड श्रीराम की चरण पादुका

रखकर भरत ने 14 साल यहीं से शासन किया था। 16 किमी

गुप्तारघाट श्रीराम ने यहीं जल समाधि ली थी। वे यहीं से साकेतधाम गए थे। 10 किमी

मखभूमि श्रीराम के जन्म के लिए राजा दशरथ ने यहीं पर यज्ञ किया था। 20 किमी

सूर्यकुंड यहां भगवान सूर्य का मंदिर और कुंड है। 3 किमी

कितने दिनों में घूम सकते हैं पूरी अयोध्या ?

अयोध्या में रामलला के दर्शन के लिए कम से कम पूरे एक दिन का समय रखें। अयोध्या के स्थानों को अच्छे से देखने के लिए कम से कम तीन दिन का प्लान बनाएं।

अयोध्या के प्रमुख उत्सव कौन-कौन से हैं ?

रामनवमी और दीपावली दोनों पर खास उत्सव का माहौल होता है। इन दिनों यहां बड़ी संख्या में भक्त आते हैं।

चैत्र, कार्तिक और सावन में यहां बड़ी संख्या में भक्त दर्शन करने पहुंचते हैं।

सावन झूला मेला (जुलाई-अगस्त) यहां देखने लायक होता है।

अक्टूबर-नवंबर में 14 कोसी प्रक्रमा के साथ यहां कार्तिक मेला लगता है।

हर माह पूर्णिमा पर सरयू स्नान के दौरान यहां उत्सव का माहौल रहता है।

आपके काम की बातें...

मौसम और पर्व के लिहाज से अयोध्या जाने का सबसे अच्छा समय मार्च, अप्रैल, मई, अक्टूबर, नवंबर और दिसंबर माह हैं।

रामलला के मंदिर में निजी सामान (फोन, वॉलेट, चार्जर, पेन, नोटबुक) नहीं ले जा सकते हैं। परिसर में लॉकर की निशुल्क व्यवस्था की गई है।

राम मंदिर में दर्शन के दौरान कम से कम पांच चौकियां हैं, जहां आपको सुरक्षा जांच से गुजरना पड़ सकता है।

रामलला के मंदिर में बुजुर्गों और दिव्यांग भक्तजनों के लिए व्हील चेयर और लिफ्ट की व्यवस्था नि:शुल्क उपलब्ध है।

अयोध्या में पूरे शहर के लिए ई-बसें शुरू की जा रही हैं। इसके अलावा गोल्टफ कोर्ट भी उपलब्ध रहेगी, जिसका किराया प्रति व्यक्ति 50 रुपए रहेगा।

राम मंदिर के ठीक बाहर अमावा पटना के महावीर मंदिर ट्रस्ट की राम रसोई है। राम रसोई में रामलला के दर्शन करने वाले श्रद्धालुओं को आधार कार्ड दिखाने से निशुल्क भोजन मिलता है।

अगर किसी को चिकित्सा सहायता की जरूरत पड़ती है तो राम मंदिर का चिकित्सा शिविर है। इसके अलावा नजदीक ही श्रीराम अस्पताल भी है।

हेल्प लाइन: सहायता के लिए रामजन्म भूमि थाना एसएचओ से 9454403310 पर और रामजन्म भूमि हेल्प डेस्क- 05278 292000 पर संपर्क कर सकते हैं।

अयोध्या के लिए विमान सेवाएं			
शहर	एयरलाइन	फ्लाइट का समय	पहुंचने का समय
दिल्ली	इंडिगो (नियमित)	11.55 AM	1.15 PM
दिल्ली	एअर इंडिया एक्सप्रेस	10 AM	11.20 AM
मुंबई	इंडिगो	12.30 PM	2.45 PM
अहमदाबाद	इंडिगो	9.10 AM	11 AM
कोलकाता	एअर इंडिया एक्सप्रेस	1.25 PM	3.10 PM
बंगलुरु	एअर इंडिया एक्सप्रेस	8.05 AM	10.35 AM

विमान कंपनी से समय की पुष्टि जरूर करें

बड़े शहरों से अयोध्या पहुंचने वाली कुछ प्रमुख ट्रेनें और उनका समय				
शहर	ट्रेन का नाम	प्रस्थान	अयोध्या आगमन	हफ्ते में कब
दिल्ली	बंदे आरत	6.10 सुबह	2.30 दोपहर	सोम, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि, रविवे
दिल्ली	अयोध्या एक्सप्रेस	6.20 शाम	7.15 सुबह	प्रतिदिन
दिल्ली	कैफियत एक्सप्रेस	8.25 शाम	6.56 सुबह	प्रतिदिन
भोपाल	यशवंतपुर गोरखपुर एक्स.	3.35 रात	4.24 दोपहर	शनि
इंदौर	इंदौर पुणे एक्सप्रेस	1.55 दोपहर	7.45 सुबह	शनि
मुंबई	साकेट एक्सप्रेस	6.00 सुबह	8.00 सुबह	बुध, शनि
कोलकाता	KOAA JAT एक्स	11.45 दोपहर	6.21 सुबह	प्रतिदिन
अनूपरा	सदयू यमुना एक्सप्रेस	1.05 दोपहर	8.51 सुबह	सोम, बुध, शनि
अहमदाबाद	सावजनती एक्सप्रेस	11.10 रात	4.22 सुबह	सोम, मंगल, गुरु, सोम, गुरु, शनि
जयपुर	नरुधर एक्सप्रेस	1.40 दोपहर	4.43 सुबह	सोम, गुरु, शनि
बंगलुरु	यशवंतपुर गोरखपुर एक्स	11.40 रात	4.24 दोपहर	बुध

उत्तर प्रदेश के शहरों से दूरी व यात्रा का समय			
शहर	दूरी किमी	यात्रा का समय	
आग्रा	468	7 घंटे	
लखनऊ	135	2.35 घंटे	
गोरखपुर	134	3.02 घंटे	
प्रयागराज	168	4.11 घंटे	
वाराणसी	220	4.22 घंटे	

फरवरी से शुरू होने वाली विमान सेवाएं			
शहर	एयरलाइन	फ्लाइट का समय	पहुंचने का समय
चेन्नई	स्पाइसजेट	12.40 PM	3.15 PM (1 फरवरी से)
दिल्ली	स्पाइसजेट	8.40 AM	10.00 AM
दरभंगा	स्पाइसजेट	11.20 AM	12.30 PM
जयपुर	स्पाइसजेट	7.30 AM	9.15 AM
पटना	स्पाइसजेट	2.25 PM	3.25 PM
अहमदाबाद	स्पाइसजेट	6.00 AM	8.00 AM
मुंबई	स्पाइसजेट	8.20 AM	10.40AM (2 फरवरी से हरसे 6 दिन)
बंगलुरु	स्पाइसजेट	10.50AM	1.30PM (2 फरवरी से हरसे 6 दिन)
पुणे	आकाशा	8.50 AM	2.55PM (2 फरवरी से सात दिनों)
ग्यालियट	एअर इंडिया एक्स	8.15 AM	11:20 AM (2 जनवरी से सात दिनों)

विमान कंपनी से समय की पुष्टि जरूर करें

किस शहर से है कितनी दूरी?		
शहर	दूरी किमी	यात्रा का समय
दिल्ली	688	10 घंटे
मुंबई	1600	27 घंटे
जयपुर	710	13 घंटे
अहमदाबाद	1350	23 घंटे
इंदौर	932	18 घंटे
भोपाल	782	16 घंटे
चण्डीगढ़	917	15 घंटे
रायपुर	786	18 घंटे
रांची	667	17 घंटे
पटना	417	8 घंटे

पढ़िए राम मंदिर के आसपास ठहरने के मौजूद चुनिंदा स्थानों के बारे में			
होटल/धर्मशाला	रूम	किराया (रु.)	मंदिर से दूरी
जैन धर्मशाला	50	500 से 2000	1.5 किमी
राम वैदेही मंदिर धर्मशाला	200	1000 से 3000	2 किमी
कनक महल	50	1000 से 3000	2 किमी
राम होटल	50	1000 से 3000	1 किमी
रामप्रस्थ होटल	40	1000 से 3000	2 किमी
रत्नीला कुटीर	25	5,000 रुपये	2 किमी
दामायणम होटल	40-50	20,000 तक	3 किमी

इंस्टाग्राम पर घंटों रील देखने वालों पर पीएम मोदी ने दी प्रतिक्रिया, कहा- ‘हमारे शरीर की जरूरत’

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को स्कूली बच्चों से ‘परीक्षा पे चर्चा’ के दौरान सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से दूरी बनाने का संदेश दिया। उन्होंने घंटों तक इंस्टाग्राम रील देखने वालों पर अपनी प्रतिक्रिया दी और इसके बहाने छात्रों को बड़ा संदेश दिया। पीएम मोदी ने 10वीं और 12वीं कक्षा के छात्रों से बात करते हुए पीएम मोदी ने कई चीजों का जिक्र किया।

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने

सोमवार को स्कूली बच्चों से ‘परीक्षा पे चर्चा’ के दौरान सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से दूरी बनाने का संदेश दिया। उन्होंने घंटों तक इंस्टाग्राम रील देखने वालों पर अपनी प्रतिक्रिया दी और इसके बहाने छात्रों को बड़ा संदेश दिया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा, ‘आप में से बहुत सारे स्टूडेंट्स मोबाइल फोन का उपयोग करते होंगे और कुछ लोग होंगे, जिनको घंटों मोबाइल फोन की आदत होगी, लेकिन क्या कभी ऐसा विचार आया कि मैं रिचार्जिंग में फोन

रखूंगा तो मेरा मोबाइल का उपयोग कम हो जाएगा इसलिए मैं रिचार्जिंग नहीं करूंगा। अगर रिचार्जिंग नहीं करेंगे तो मोबाइल काम करेगा क्या? मोबाइल जैसे चीज रोज देखते हैं, उसको भी चार्ज करना पड़ता है और अगर मोबाइल को रिचार्ज करना पड़ता है तो शरीर को भी रिचार्ज करना चाहिए।’

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आगे कहा, ‘जैसे मोबाइल में चार्जिंग की जरूरत है, वैसे हमारे शरीर को चार्जिंग की जरूरत है। आप ऐसा सोचो कि बस पढ़ना है तो सिर्फ पढ़ाई करेंगे,

लेकिन ऐसा कभी नहीं हो सकता। जीवन ऐसे नहीं जी सकते। इसलिए जीवन को थोड़ा संतुलित बनाने की जरूरत है। इसके अलावा, पीएम मोदी ने 10वीं और 12वीं कक्षा के छात्रों से बात करते हुए पीएम मोदी ने कई चीजों का जिक्र किया। चर्चा के दौरान प्रधानमंत्री ने कोरोना काल का भी जिक्र किया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि कोरोना काल में मैंने देशवासियों से ताली थाली बजाने को कहा। हालांकि, यह कोरोना को खत्म नहीं करता, लेकिन एक सामूहिक शक्ति को जन्म देता है।



कितनी भी बिजली खर्च करो, बिल जीरो रुपए ही आएगा; दिल्ली की केजरीवाल सरकार लाई खास नीति



परिवहन विशेष न्यूज

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके कहा कि नीति के तहत घर की छत पर सोलर पैनल लगाने वालों को सरकार प्रोत्साहन देगी। दिल्ली सरकार सौर पैनल लगाने पर 10 हजार की सब्सिडी भी देगी। 300 किलोवाट का सिस्टम लगाएंगे तो सरकार से इंसेंटिव भी मिलेगा। सोलर पैनल लगाएंगे और उनका 201 यूनिट से अधिक बिजली खर्च आता है...

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को दिल्ली के सोलर नीति 2024 को लेकर जानकारी दी है। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार ने देश की सबसे बेहतरीन सौर ऊर्जा नीति 2024 तैयार की है। यह ऐसी नीति है, जिससे दिल्ली सरकार बिजली के मामले में आत्मनिर्भर होगी और



इससे लोगों को आर्थिक लाभ भी मिलेगा।

बिजली का बिल आएगा शून्य

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके कहा कि नीति के तहत घर की छत पर सोलर पैनल लगाने वालों को

चार साल में लिया जाएगा पैसा

सरकार की ओर से बताया गया कि अभी सरकारी इमारतों पर सौर ऊर्जा पैनल लगाए जा रहे हैं। मगर लोगों में अभी उतनी जागरूकता नहीं है, अब इसे बढ़ाया जाना है। इससे पहले 2016 में सौर ऊर्जा नीति लाई गई थी, जिसे देश की सबसे प्रोग्रेसिव नीति माना गया था। नई नीति बनाई गई है, जो लोग अपने घर पर सौर पैनल लगाने पर 10 हजार में पैसा वसूल हो जाएगा।

दिल्ली सरकार देगी सब्सिडी

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने आगे कहा कि नीति के तहत, 500 वर्ग मीटर क्षेत्रफल वाली सभी सरकारी इमारतों को अगले तीन वर्षों में अनिवार्य रूप से छत पर सौर पैनल लगाना होगा। इसके अलावा दिल्ली सरकार सौर पैनल लगाने पर 10 हजार की सब्सिडी भी देगी। 300 किलोवाट का सिस्टम लगाएंगे तो सरकार से इंसेंटिव भी मिलेगा।

दिल्ली के इन इलाकों में रहने वाले पहले ही कर लें पानी की व्यवस्था, बाधित रहेगी जल आपूर्ति



दिल्ली जल बोर्ड (Delhi Jal Board) द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार भूमिगत जलाशय और बूस्टर पंपिंग स्टेशन की वार्षिक सफाई के कारण 31 जनवरी और दो फरवरी को दिल्ली के कई क्षेत्रों में जल आपूर्ति बाधित रहेगी। सेक्टर 24 रोहिणी रिटाला गांव रिटाला जल बोर्ड कर्मचारी क्वार्टर किशनगढ़ मालवीय नगर 288 एसएफएस राजौरी गार्डन बीपीएस सी-6 ए ब्लॉक जनकपुरी एएन ब्लॉक शालीमार बाग बीपीएस में जल आपूर्ति बाधित रहेगी।

नई दिल्ली। दिल्ली जल बोर्ड (Delhi Jal Board) द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, भूमिगत जलाशय और बूस्टर पंपिंग स्टेशन की वार्षिक सफाई के कारण 31 जनवरी और दो फरवरी को दिल्ली के कई क्षेत्रों में जल आपूर्ति बाधित रहेगी। 31 जनवरी को 672 एसएफएस पॉकेट-एक सेक्टर-22, सेक्टर-23 बी पॉकेट आठ गोल्फ लिंक अपार्टमेंट, सेक्टर 24 रोहिणी, रिटाला गांव, रिटाला जल बोर्ड कर्मचारी क्वार्टर, किशनगढ़, मालवीय नगर, 288 एसएफएस राजौरी गार्डन बीपीएस, सी-6 एसएफएस जनकपुरी, एएन ब्लॉक शालीमार बाग बीपीएस में जल आपूर्ति बाधित रहेगी।

एक फरवरी को इन इलाकों में बाधित रहेगी जल आपूर्ति

एक फरवरी को पॉकेट-25 सेक्टर 24 रोहिणी, ए-ब्लॉक पॉकेट-चार सेक्टर 18 रोहिणी, किशनगढ़, महरोली, ओल्ड सब्जी मंडी, बर्फखाना, मलकागंज, सराय फूस, बंगलो रोड, राजपुर रोड, शक्तिनगर, विजय नगर, रूपनगर, विश्वविद्यालय क्षेत्र, पुलिस लाइन क्षेत्र, श्री राम इंस्टीट्यूट, बरात घर, 80 एसएफएस ग्रीन व्यू अपार्टमेंट बीपीएस, सी-2 ए-ब्लॉक जनकपुरी, एजे ब्लॉक शालीमार बाग बीपीएस, केशवपुरम, लॉरेंस रोड, त्रिनगर, रामपुरा और अशोक नगर में जल आपूर्ति बाधित रहेगी। जल बोर्ड ने लोगों को पर्याप्त मात्रा पानी का भंडार करके रखने की सलाह दी है। जरूरत के अनुसार, टैंकर से जल आपूर्ति की जाएगी।

'विचारणीय नहीं है मानहानि का मुकदमा...', दिल्ली HC में महेंद्र सिंह धौनी का जवाब

न्यायमूर्ति प्रतिभा एम सिंह की पीठ के समक्ष धौनी की तरफ से अधिवक्ता ने कहा कि उनके मुवक्किल के खिलाफ मुकदमा चलने योग्य नहीं है और क्रिकेटर ने केवल दिवाकर के खिलाफ रांची में मामला दायर किया था। शिकायतकर्ता दिवाकर की ओर से पेशा वकील ने कहा कि मीडिया रिपोर्टें निष्पक्ष नहीं थीं क्योंकि उनके मुवक्किल को पहले ही टग और चोर करार दिया जा चुका है।

नई दिल्ली। दो पूर्व बिजनेस पार्टनर्स मिहिर दिवाकर द्वारा दायर किए गए मानहानि मुकदमा पर महेंद्र सिंह धौनी की तरफ से दिल्ली हाई कोर्ट में जवाब दखिल किया गया है। महेंद्र सिंह धौनी की तरफ से पेश हुए अधिवक्ता ने कहा कि मानहानि मुकदमा विचारणीय नहीं है। न्यायमूर्ति प्रतिभा एम सिंह की पीठ के समक्ष धौनी की तरफ से अधिवक्ता ने कहा कि उनके मुवक्किल के खिलाफ मुकदमा चलने योग्य नहीं है और क्रिकेटर ने केवल दिवाकर के खिलाफ रांची में मामला दायर किया था। वहीं, शिकायतकर्ता दिवाकर की ओर से पेशा वकील ने कहा कि मीडिया रिपोर्टें निष्पक्ष नहीं थीं क्योंकि उनके मुवक्किल को पहले ही टग और चोर करार दिया जा चुका है। अदालत ने दोनों पक्षों को सुनने के बाद मामले की सुनवाई तीन अप्रैल तक के लिए स्थगित कर दी। वादी और पूर्व बिजनेस पार्टनर मिहिर दिवाकर और उनकी पत्नी सौम्या दास ने धौनी, कई सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और मीडिया घरानों के खिलाफ स्थायी निषेधाज्ञा के साथ ही हर्जाना देने का निर्देश देने की मांग की है। वादियों ने धौनी को उनके विरुद्ध मानहानिकारक, झूठी बातें बनाने, प्रकाशित करने, प्रसारित करने से रोकने का निर्देश देने की मांग की है।

भारतीय मजदूर संघ - दिल्ली प्रदेश का 22 वां त्रैवार्षिक अधिवेशन संपन्न नई कार्यकारिणी की हुई घोषणा

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नई दिल्ली। भारतीय मजदूर संघ - दिल्ली प्रदेश का दो दिवसीय 22वां त्रैवार्षिक अधिवेशन (27-28 जनवरी 2024) प्रदेश अध्यक्ष श्री अनीश मिश्र जी की अध्यक्षता में आज गांधी दर्शन स्मृति, राजघाट, दिल्ली में संपन्न हुआ। अधिवेशन में भारतीय मजदूर संघ से जुड़ी सभी यूनियन एवं संगठनों के प्रतिनिधि कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

अधिवेशन का शुभारंभ भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक और महान विचारक परम श्रद्धेय श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए महामंत्री डॉ दीपेंद्र चाहर जी द्वारा महामंत्री प्रतिवेदन की प्रस्तुति के साथ किया गया। डॉ चाहर ने उनके पिछले कार्यकाल के दौरान, भारतीय मजदूर संघ - दिल्ली प्रदेश के कार्य समिति सदस्यों तथा भारतीय मजदूर संघ दिल्ली प्रदेश से संबंधित सभी यूनियन एवं संगठनों के कार्यकर्ताओं का संगठन के कार्यों को आगे बढ़ाने और उनकी कार्य कुशलता, कार्य परायणता और कर्तव्य निष्ठा के लिए आभार व्यक्त किया। अधिवेशन में महिला सशक्तिकरण के मद्देनजर महिला सत्र के साथ छः सत्रों का आयोजन किया गया जिनमें कार्यकर्ताओं को भारतीय मजदूर संघ के प्रांतीय संगठन मंत्री परम आदरणीय श्रीमान अनुपम जायसवाल जी, राष्ट्रीय वित्त सचिव श्रीमान राठौर जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दिल्ली प्रांत के प्रचारक परम आदरणीय श्रीमान जितिन जी, भारतीय मजदूर संघ की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती नीता चौबे



जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। अधिवेशन के अंतिम सत्र में भारतीय मजदूर संघ दिल्ली प्रदेश की नई कार्यकारिणी का गठन हुआ जिसमें अध्यक्ष की जिम्मेदारी हिंदू राव अस्पताल की इंदु गम्बाल व महामंत्री का दायित्व भारतीय पुरातत्व विभाग के डॉ दीपेंद्र चाहर को मिला।

नोबल कोज द्वारा मुफ्त सवास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन

नशे से दूर रहें युवा :डॉ अनिल लोखंडे ,सामाजिक कार्य हमारा महत्वपूर्ण कर्तव्य है :राम कुमार

परिवहन विशेष। एसडी सेठी।

नई दिल्ली। 175 वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष में साउथ दिल्ली के संगम विहार इलाके में सामाजिक संस्था नोबल कोज ने एक मुफ्त सवास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया। जिसमें बत्रा हॉस्पिटल के डॉ अनिल लोखंडे (Orthopaedics surgeon) और साथ ही श्री राम कुमार (काले भाई), गौतम अत्री , इन्द्रान्न चैधरी , रहमान जी, एडवोकेट फैज इमाम , प्रोफेसर मुख्तार खान , अजीम एवं अन्य लोग शामिल हुए और इस मुफ्त जाँच शिविर को सफल बनने के अपना योगदान दिया। इस कैम्प में कई बिमारियों की जाँच फ्री की गई जैसे शुगर ,थाइराइड गठिया बाई जैसे अन्य हिड्डियों से जुडी बिमारियों को भी



जाँच मुफ्त की गई और एक दिन की दवाई भी दी गई, इस कैम्प में उत्तर प्रदेश मेरठ से आए कुछ लोगों ने भी इसका लाभ उठाया जैसे किसान नेता वीरपाल घोपला जी ने भी अपनी जाँच कराई उन्होंने बताया की हम यहां अपनी रिश्ते दारी में आए हुए थे जानकारी मिली की गणतंत्र दिवस के मौके पर एक सवास्थ्य जाँच शिविर लगा हुआ है तो सीधा इसका लाभ उठाना चाहिए उन्होंने आगे कहा की समाज में इस तरह के कार्यक्रम समय समय पर होते रहने चाहिए क्योंकि इस बाग दौड़ भरी जिंदगी में हम अपनी सेहत का ध्यान नहीं रख पाते और कई छोटी छोटी बीमारिया इसी कारण बड़ी बीमारी का रूप ले लेती हैं।

श्री राम कुमार ने कहा कि सामाजिक कार्य हमारा महत्वपूर्ण कर्तव्य है इसलिए यह करते रहना चाहिए।

यही बत्रा हॉस्पिटल के डाक्टर अनिल लोखंडे का कहना है की हम ज्यादातर तर बाहर की चीजों को खाना पसंद करते हैं

उन्होंने कहा बिमारियों के बढने का कारण एक हमारा खान पान भी है उन्होंने कहा कि आज के समय नई पीढ़ी नशे की आदि होती जा रही है लेकिन उनको अगर नशा करना है तो वे अच्छे कामो का नशा करें अपनी

सेहत को अच्छा बनाने का नशा करें समाज की सेवा करने का नशा करें ऐसा नशा ना करें जो उनके जीवन को बर्बाद करे।

इस शिविर के आयोजक और संस्था के अध्यक्ष डाक्टर इशानुद्दीन ने कहा की लोगों

की सेवा करना अच्छा लगता है हम इस समाज के लिए जो कुछ भी बेहतर कर सकते हैं हमें करना चाहिए दूसरों को भी इससे प्रेरणा मिलती है इसी उम्मीद के साथ हम ये काम लगातार करते चले आ रहे हैं।

क्या है भाजपा की पांच स्तरीय ब्यूह रचना, जिसके बलबूते दिल्ली में तीसरी बार सातों लोकसभा सीटें जीतने की तैयारी हो रही

दिल्ली में पार्टी को जमीन पर मजबूत करने के लिए भाजपा कई कदम उठा रही है। बूथ प्रबंधन में बदलाव करने के साथ ही प्रदेश में संगठन को पांच स्तरीय बनाने की तैयारी शुरू हो गई है। अभी तक बूथ मंडल जिला व प्रदेश स्तरीय इकाई के माध्यम से संगठनात्मक गतिविधियों को आगे बढ़ाया जाता है।

नई दिल्ली। दिल्ली में पार्टी को जमीन पर मजबूत करने के लिए भाजपा कई कदम उठा रही है। बूथ प्रबंधन में बदलाव करने के साथ ही प्रदेश में संगठन को पांच स्तरीय बनाने की तैयारी शुरू हो गई है। अभी तक बूथ, मंडल, जिला व प्रदेश स्तरीय इकाई के माध्यम से संगठनात्मक गतिविधियों को आगे बढ़ाया

जाता है। इस चार स्तरीय संगठनात्मक संरचना में बदलाव किया जा रहा है। अब मंडल व जिला के बीच विधानसभा स्तर पर भी पदाधिकारी तैनात होंगे।

लोकसभा चुनाव में तीसरी बार सभी सातों सीटों पर जीत दोहराने के लिए भाजपा बूथ प्रबंधन और संगठनात्मक गतिविधियों पर विशेष ध्यान दे रही है। इसे ध्यान में रखकर दिल्ली में पहली बार ई विस्तारक की तैनाती करने के बाद प्रदेश में पांच स्तरीय ब्यूह रचना की तैयारी शुरू हो गई है।

किसी क्या मिल रही जिम्मेदारी

प्रत्येक विधानसभा के लिए प्रभारी तैनात करने के साथ ही संयोजक नियुक्त करने का निर्णय लिया गया है। रविवार को सभी 70 विधानसभा क्षेत्रों के प्रभारी घोषित कर दिए गए

ई विस्तारक कर रहे हैं बूथ पदाधिकारियों का सत्यापन

बूथ प्रबंधन को लेकर प्रश्न खड़े होते रहे हैं। यह आरोप लगता है कि लक्ष्य पूरा करने के लिए मंडल व बूथ अध्यक्ष पंच परमेश्वर व पन्ना प्रमुखों की फर्जी सूची तैयार कर प्रदेश नेतृत्व को देते हैं। कागज में तो यह काम पूरा हो जाता है, लेकिन जमीन पर इनकी तैनाती नहीं होती है। इन कमियों को दूर करने के लिए प्रत्येक शक्ति केंद्र (चार से छह बूथ मिलाकर एक शक्ति केंद्र) विस्तारक की तैनाती की गई है। ई विस्तारक त्रिदेव व अन्य बूथ पदाधिकारियों का सत्यापन कर सरल ऐप पर उनका विवरण डाल रहे हैं। 50 प्रतिशत से अधिक बूथ पर यह काम पूरा कर लिया गया है।



ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन और इन खूबियों के साथ आती हैं ये गाड़ियां, जानिए अपने लिए बेस्ट

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। पिछले कुछ सालों में वाहन खरीदने वाले ग्राहकों के बीच ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन खूब लोकप्रिय हुआ है। भले ही वर्तमान समय में अधिकतर लोग होते हैं जिनकी पहली पसंद मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ आने वाली गाड़ी होती है। लेकिन ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन वाली खरीदने वालों की भी कमी नहीं है। यहां हम ऐसी गाड़ियां बताते वाले हैं जो 10 लाख से कम में इस सुविधा के साथ आती हैं।

मारुति की तरफ से आने वाली ये गाड़ी ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ पेश की जाती है। गाड़ी का आकार देखने में माइक्रो एसयूवी की तरह लगता है। इसमें 5 स्पीड एएमटी ट्रांसमिशन दिया गया है, जिसे 1.2 लीटर पेट्रोल इंजन के साथ जोड़ा गया है। इस इंजन की क्षमता 88 बीएचपी की शक्ति पैदा करने की है। वहीं, इसकी कीमत भी 10 लाख के अंदर है।

Tata Punch

ग्राहकों के बीच टाटा पंच खूब लोकप्रिय गाड़ी है। सब-कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट में आने वाली इस गाड़ी में 1.2 लीटर पेट्रोल इंजन प्रदान किया है जिसे 5 स्पीड एएमटी गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है। ये इंजन 87 बीएचपी की शक्ति और 115 एनएम का पीक टॉर्क पैदा करने का सामर्थ्य रखता है। बता दें यह गाड़ी 12 ट्रिम ऑप्शन के साथ ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन में उपलब्ध है।

Renault Kiger

यह गाड़ी मैनुअल और क्लचलेस ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ पेश की जाती है। इसका एएमटी वेरिएंट 6 ट्रिम

पिछले साल कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट में लॉन्च की गई इस गाड़ी को भी मैनुअल और ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ खरीदा जा सकता है। इसमें 6 ट्रिम ऑप्शन मिलते हैं। गाड़ी में 1.2 लीटर कम्पा पेट्रोल

ऑप्शन में मौजूद है। वहीं इसमें एएमटी ट्रांसमिशन के साथ मैनुअल और सीवीटी विकल्प भी मिलते हैं। इसकी कीमत भी 10 लाख रुपये से नीचे है।

Hyundai Exter

ऑप्शन में मौजूद है। वहीं इसमें एएमटी ट्रांसमिशन के साथ मैनुअल और सीवीटी विकल्प भी मिलते हैं। इसकी कीमत भी 10 लाख रुपये से नीचे है।



अचानक धुं-धुं कर जलने लगी Volvo C40 Recharge इलेक्ट्रिक कार, ऐसी स्थिति में भूलकर भी न करें ये मिस्टेक

EV में आग लगने की स्थिति में सबसे पहले उसे रोकना चाहिए और इग्निशन को बंद कर देना चाहिए। इसके अलावा अगर आप गाड़ी में आग पर नियंत्रण पाने वाला कोई उपकरण रखते हैं तो उसे किसी तरह वाहन से बाहर निकालें और उससे आग पर काबू पाने का प्रयास करें। यहां कुछ चीजें बताते वाले हैं जो ईवी में आग लगने पर ध्यान रखनी चाहिए।

नई दिल्ली। छत्तीसगढ़ में इलेक्ट्रिक एसयूवी Volvo C40 Recharge सड़क पर जलकर राख हो गई। इस कार में सवार सभी पैसंजर और कार के ओनर समय से कार से बाहर आ गए थे। इस घटना का वीडियो कार के ओनर ने अपने मोबाइल फोन पर शूट कर लिया था।

इस वीडियो में वोल्वो की इलेक्ट्रिक एसयूवी में लगी आग को देखा जा सकता है। वोल्वो की कारें सेफ्टी के लिए जानी जाती हैं। इस घटना के सामने आने के बाद एक बार फिर से इलेक्ट्रिक गाड़ियां सवालों के घेरे में आ गई हैं। हम यहां बताते वाले हैं कि इलेक्ट्रिक कार में आग लगने की स्थिति में क्या मिस्टेक नहीं करनी चाहिए।

अधिक वोल्टेज वाले कॉम्पोनेंट्स छूने से बचें

इलेक्ट्रिक कार में आग लगने की स्थिति में कुछ लोग हड़बड़ी में आ जाते हैं और उस पर नियंत्रण करने के लिए उच्च वोल्टेज घटकों या बैटरी हाउसिंग को छूने लगते हैं। उनको लगता है कि ऐसा करने से आग पर काबू पाया जा सकता है। लेकिन ईवी में आग से निपटने के दौरान आपको अधिक वोल्टेज वाले कॉम्पोनेंट्स बिल्कुल भी टच नहीं करना चाहिए।

पैसंजर को बाहर निकालें

अगर ईवी में आग लगने का संकेत मिलता है, तो तुरंत गाड़ी में मौजूद सवारियों को बाहर निकालना चाहिए और जितनी भी जरूरी चीजें उन्हें भी बाहर निकाल लेना चाहिए। अगर कोई सामान वहां रह भी जाता है तो रिस्क लेकर उसे बाहर लाने की गलती नहीं करनी चाहिए।

गाड़ी रोकें और इग्निशन बंद करें

ईवी में आग लगने की स्थिति में सबसे पहले उसे रोकना चाहिए और इग्निशन को बंद कर देना चाहिए। इसके अलावा अगर आप गाड़ी में आग पर नियंत्रण पाने वाला कोई उपकरण रखते हैं तो उसे किसी तरह वाहन से बाहर निकालें और उससे आग पर काबू पाने का प्रयास करें।

Volvo का नहीं आया रिएक्शन

जिस एक्स अकाउंट पर यह वीडियो शेयर किया गया है उसमें वोल्वो की भी टैग किया गया है। हालांकि फिलहाल, इस पर वाहन निर्माता के द्वारा कोई बयान नहीं दिया गया है।

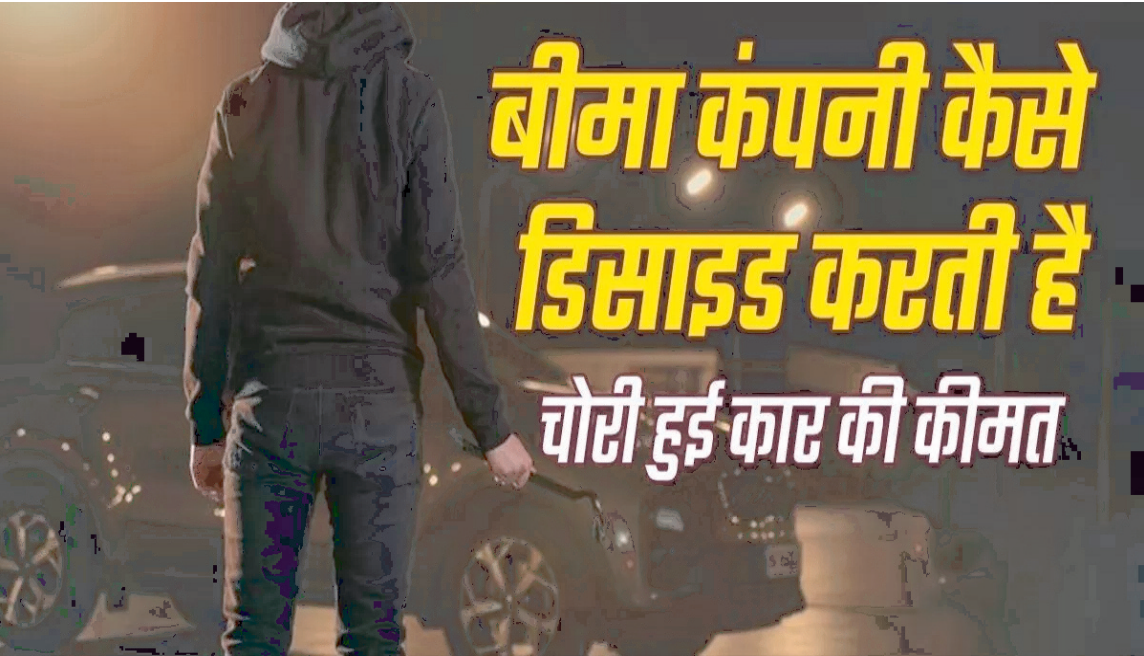
क्या होती है इंश्योरेंस डिक्लेयर्ड वैल्यू, कार चोरी होने की स्थिति में इस आधार पर तय होती है कीमत

वाहन का बीमा कराते समय इंश्योरेंस डिक्लेयर्ड वैल्यू (IDV) शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। इसको शॉर्ट में आईडीवी भी कहते हैं। बहुत से लोगों को इसके बारे में जानकारी नहीं होती है। आसान भाषा में समझें तो आईडीवी को कार की बाजार कीमत के रूप में समझा जा सकता है। यानी मौजूदा समय में आपको गाड़ी की कितनी कीमत मिल सकती है।

नई दिल्ली। कार खरीदने का सपना हर कोई देखता है। लेकिन बहुत कम लोग ही ये सपना पूरा कर पाते हैं। ऐसे में जब कोई नई गाड़ी खरीदता है तो उसकी सेफ्टी खास ख्याल रखना भी बहुत जरूरी हो जाता है। इसके लिए हम गाड़ी का इंश्योरेंस करवाते हैं। हम यहां इसी से जुड़े कुछ सवालों के जवाब देने वाले हैं जिनको लेकर ज्यादातर लोग कन्फ्यूज रहते हैं।

इंश्योरेंस डिक्लेयर्ड वैल्यू क्या है?

वाहन का बीमा कराते समय इंश्योरेंस डिक्लेयर्ड वैल्यू (IDV) शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। इसको शॉर्ट में आईडीवी भी कहते हैं। बहुत से लोगों को इसके बारे में जानकारी नहीं होती है। आसान भाषा में समझें तो आईडीवी को कार की बाजार कीमत के रूप में समझा जा सकता है। यानी मौजूदा समय में आपको गाड़ी की कितनी कीमत मिल सकती है।



यदि आपकी कार चोरी हो जाती है या मरम्मत से परे क्षतिग्रस्त हो जाती है तो यह आपके कार बीमा कंपनी द्वारा आपको दी जाने वाली उच्चतम राशि होती है।

इंश्योरेंस को प्रभावित करता है IDV

जैसा कि पहले बताया इंश्योरेंस के वक्त आईडीवी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और इसके बारे में न जानना नुकसान भी करा सकता है। आईडीवी इंश्योरेंस को भी प्रभावित करता है। इसमें कई कारक काम करते हैं।

कार की उम्र - कार की उम्र उसकी आईडीवी के प्रमुख निर्धारकों में से एक है। जैसे-जैसे कार का बाजार मूल्य समय के साथ कम होता जाता है, उसकी आईडीवी भी कम होती जाती है। इसलिए, नई कार की तुलना में पुरानी कार की आईडीवी कम होती है।

कार का प्रकार - बाजार में विभिन्न प्रकार की कार मौजूद हैं जिनमें सेडान, हैचबैक, कॉम्पैक्ट एसयूवी, एसयूवी और एमयूवी शामिल हैं। ऐसे में हर किसी के लिए अलग-अलग आईडीवी होती है।

पंजीकृत शहर - आपकी गाड़ी किस शहर में पंजीकृत है। यह भी आपकी आईडीवी को प्रभावित करता है।

एक्सेसरीज - नई गाड़ी खरीदते वक्त कुछ लोग अतिरिक्त एक्सेसरीज भी खरीदते हैं तो आईडीवी गणना के दौरान इन सामानों के मूल्य में उनकी उम्र और कामकाजी स्थिति के आधार पर इनका भी हिसाब लगाया जाता है।

कितनी होनी चाहिए गाड़ी के टायर में हवा, जानिए मारुति सुजुकी की कारों का एयर प्रेशर

वैसे तो गाड़ियों के लिए अलग-अलग टायर एयर प्रेशर होता है। लेकिन आमतौर पर अधिकतर कारों के लिए 32 से 35 पीएसआई एयर सही मानी जाती है। एयर प्रेशर को पाउंड्स पर स्क्वायर इंच यानी PSI में नापा जाता है। अगर टायर में इससे कम हवा रखी जाती है तो ये कई बार दुर्घटना का कारण भी बन जाता है।

नई दिल्ली। अगर आप चाहते हैं कि आपकी कार लंबे समय तक साथ निभाए तो इसके लिए उसकी नियमित तौर पर देखभाल करना बहुत जरूरी होता है। कार में जितने भी पार्ट लगे होते हैं वह सभी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

वहीं, सभी कारों में टायरों की भी जरूरी भूमिका होती है। कार के टायर में एयर का ऊपर नीचे होना भी कई बार नुकसान का सबब बन जाता है। ऐसे में हम यहां बताते वाले हैं कि कार के टायर में कितनी हवा रखनी चाहिए। साथ ही मारुति-सुजुकी की कारों का एयर प्रेशर चार्ट के बारे में भी बताएंगे।

कितनी होनी चाहिए टायर में हवा

वैसे तो गाड़ियों के लिए अलग-अलग टायर एयर प्रेशर होता है। लेकिन आमतौर पर अधिकतर कारों के लिए 32 से 35 पीएसआई एयर सही मानी जाती है। एयर प्रेशर को पाउंड्स पर स्क्वायर इंच यानी PSI में नापा जाता है। अगर टायर में इससे कम हवा रखी जाती है तो ये कई बार दुर्घटना का कारण भी बन जाता है।

मारुति की गाड़ियों के लिए सही प्रेशर चार्ट

मारुति सुजुकी की कुछ गाड़ियों के लिए नीचे एयर प्रेशर चार्ट बताया गया है, जिसे आप नीचे दे सकते हैं।

मारुति की गाड़ियों के लिए सही प्रेशर चार्ट			
नाम	साइज	पिछला टायर	अगला टायर
मारुति ऑल्टो 800	12 इंच	30 साई	30 साई
मारुति एस प्रेसो LXI	13 इंच	33 पीएसआई	33 साई
सेलेटियो एलएक्सआई	13 इंच	36 साई	33 साई
मारुति इग्निज	15 इंच	36 साई	32 साई
मारुति बलेनो डीजल	15 इंच	32 साई	29 साई

मौसम का भी पड़ता फर्क

कई वाहन निर्माताओं के द्वारा मौसम के हिसाब से अलग-अलग एयर प्रेशर रखने का सुझाव दिया जाता है। जैसे सर्दियों के मौसम में एयर प्रेशर अधिक रखना सही होता है जबकि गर्मियों में ये थोड़ा कम रखना अनुकूल माना जाता है। पीएसआई के पैमाने पर ये अंतर 3-5 हो सकता है।

अपने पास रखें ये सामान

वर्तमान समय में जो गाड़ियां आती हैं उनमें टायर इन्फ्लेटर दिया जाता है। लेकिन अगर आपकी गाड़ी में ये नहीं है तो इसे मार्केट से खरीद सकते हैं। यात्रा के दौरान रास्ते में भी एयरप्रेशर चेक करवा सकते हैं।

ऑटोमोटिव सुरक्षा का सफर: हैकर्सएरा के नौ साल का सफर

2015 में स्थापित हुई कंपनी हैकर्सएरा कनेक्टेड व्हीकल्स को सुरक्षा बनाने में लगातार महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। पिछले नौ वर्षों में कंपनी ने लगातार यह कोशिश की है कि कभी भी बढ़ते हुए साइबर सुरक्षा के चैलेंजेस के आगे कदम बढ़ाया जा सके।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता मशीन लर्निंग और व्यावहारिक एनालिटिक्स का संगम कंपनी को बदलते हुए साइबर खतरों के खिलाफ वाहनों को सुरक्षित रखने में मदद करता है।

नई दिल्ली। ऑटोमोटिव सुरक्षा में तेजी से बदलते समय में, हैकर्सएरा एक ऐसा पार्यनियर बन चुका है जो अपने नौ साल के शानदार सफर को मनाने में व्यावसायिकता और सुरक्षा में विभूतियों में महान योगदान दिया है। विकास चौधरी द्वारा 2015 में स्थापित हुई कंपनी ने

कनेक्टेड व्हीकल्स के लिए सुरक्षा की भविष्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

नौ साल का आविष्कार

हैकर्सएरा, अपने उद्घाटन के बाद से ही ऑटोमोटिव सुरक्षा क्षेत्र में नवीनतम तकनीकों में सीमित करने का संकल्प रखता है। पिछले नौ वर्षों में, कंपनी ने लगातार यह कोशिश की है कि कभी भी बढ़ते हुए साइबर सुरक्षा के चैलेंजेस के आगे कदम बढ़ाया जा सके।

सुरक्षा उपायों का पार्यनियर

एक उच्च पद में, हैकर्सएरा ने मजबूत सुरक्षा उपायों को लागू करने में आगे बढ़ने का कार्य किया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, और व्यावहारिक एनालिटिक्स का संगम, कंपनी को बदलते हुए साइबर खतरों के खिलाफ वाहनों को सुरक्षित रखने में मदद करता है।

व्यावसायिक चुनौतियों का समाधान

जबकि ऑटोमोटिव इंडस्ट्री कनेक्टेड और ऑटोनोमस व्हीकल्स की ओर तेजी से बढ़ रही है, तो साइबर सुरक्षा का महत्व हमेशा से अधिक हो गया है। हैकर्सएरा ने व्यावसायिक तौर पर गाड़ी के सिस्टम्स को निशाना बनाने वाले खतरों का सामना करने में सक्रिय भूमिका निभाई है, जिससे



न केवल ड्राइवर्स बल्कि पैडेस्ट्रियन्स की सुरक्षा भी हो।

विश्व भर में प्रभाव और साझा

एक विश्व भर में स्थापित होने के बाद, हैकर्सएरा ने साइबर सुरक्षा समर्थन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कंपनी की प्रमुख उद्यमों में सहयोग ने उसे एक उद्योग नेता के रूप में नहीं केवल मजबूती दी है, बल्कि यह भी सुझाव दिया है कि कैसे सुरक्षा उपायों का विकास किया जा सकता है।

बाजार में प्रमुख

2024 में, हैकर्सएरा गौरव से बाजार में भागीदारी का शिखर धारण कर रही है, जो उसके ज्ञान और थरोसे का प्रतीक है। कंपनी ने

नवीनतम उपायों और सुरक्षा में प्रोएक्टिव दृष्टिकोण के कारण उसकी असाधारण सफलता और बाजार में नेतृत्व का सम्मान है।

भविष्य में सुरक्षा का संकल्प

जब हैकर्सएरा अपने दूसरे दशक की ओर बढ़ता है, तो इन्वेंशन को बढ़ाने और कनेक्टेड व्हीकल्स की सुरक्षा को सुधारने का संकल्प बना

रहेगा। कंपनी की भविष्य के दृष्टिकोण में सुरक्षा तकनीकों में लगातार प्रगतिशील वृद्धि, प्रोएक्टिव खतरा जानकारी, और उद्योगिक स्तर के स्तानिकों के साथ सहयोग शामिल है।

कनेक्टेड मोबिलिटी के भविष्य को समर्थन देना

हैकर्सएरा का सफर सिर्फ सफलता की जश्न मनाने के लिए नहीं है, बल्कि यह दिखाता है कि कंपनी का प्रभाव ऑटोमोटिव साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में गहरा है। आगामी दशक रहस्यमयी संभावनाएं लेकर आता है, और हैकर्सएरा उन रास्तों का नेतृत्व करते हुए, ग्लोबल रूप से कनेक्टेड व्हीकल्स के लिए एक सुरक्षित और मजबूत भविष्य को सुझाता है।

अंत में : जब हम हैकर्सएरा के नौ साल के कमाल के सफर को मनाते हैं, तो स्पष्ट है कि कंपनी का असर ऑटोमोटिव साइबर सुरक्षा के दृष्टिकोण पर गहरा है। आगामी दशक रोचक संभावनाएं लेकर आता है, और हैकर्सएरा उस रास्ते पर नेतृत्व करके, ग्लोबल रूप से कनेक्टेड व्हीकल्स के लिए एक सुरक्षित और अधिक सुरक्षित भविष्य को सुझाने का काम करता है।

चुनावी साल में अंतरिम बजट से उम्मीदें

एक फरवरी को वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण के द्वारा लोकसभा में पेश किए जाने वाले वर्ष 2024 के अंतरिम बजट की तैयारियों का अंतिम चरण 24 जनवरी को हलवा वितरण समारोह के साथ आरंभ हुआ। पिछले तीन पूर्ण बजट की तरह नया अंतरिम बजट भी पूरी तरह से पेपरलेस होगा। वस्तुतः इस समय पूरे देश की निगाहें वित्तमंत्री के द्वारा पेश किए जाने वाले अंतरिम बजट की ओर लगी हुई हैं। वस्तुतः उनमें जिस साल लोकसभा चुनाव होते हैं, उस वर्ष दो बजट आते हैं। एक अंतरिम बजट और दूसरा पूर्ण बजट होता है। सामान्यतया अंतरिम बजट में नई सरकार बनने तक की व्यव ज़रूरतों को पूरा करने का उद्देश्य होता है। लेकिन अधिकांश अंतरिम बजटों में लोक लुभावन योजनाओं और बड़ी-बड़ी राहतों का डेर लगाया जाता रहा है। इस बार वित्तमंत्री सीतारमण वित्तीय अनुशासन के साथ आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर ज़रूरी राहतों और आर्थिक कल्याण की योजनाओं से संतुलित अंतरिम बजट पेश करते हुए दिखाई दे सकती हैं। निःसंदेह इस समय वर्ष 2024-25 के अंतरिम बजट को अंतिम रूप देते समय दो अहम मसले वित्तमंत्री के समक्ष हैं। एक का संबंध उन राजकोषीय गुंजाइश और आकार से है जो फिलहाल केंद्र सरकार के पास अनुकूल स्थिति में है और दूसरा मुख्य आगामी आम चुनावों में आवश्यक चुनावी लाभ हासिल करने के लिए कुछ नई व्यव योजना की घोषणा और आर्थिक कल्याण को लेकर सरकार की राजनीतिक अनिवार्यता से संबंधित है। वित्तमंत्री ने सीतारमण ने कहा है कि अंतरिम बजट लेखानुदान होगा।

पूर्ण बजट लोकसभा चुनावों के परिणामों के कोई एक माह बाद आने की संभावना रहेगी। कहा है कि जितने तरह वर्ष 2000 के बाद प्रस्तुत हुए तीन अंतरिम बजटों में लोक लुभावन बड़ी घोषणाएँ की गई थी और कर उपायों की अनदेखी की गई, वह वैसे नहीं करने जा रही हैं। उनके द्वारा लोकसभा चुनाव के पूर्व प्रस्तुत किए जाने वाले नए अंतरिम बजट में वैसेी बड़ी-बड़ी लोक लुभावन योजनाओं को शामिल नहीं किया जाएगा। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि नए अंतरिम बजट के समय वित्तमंत्री सीतारमण के पास आयकर परिदृश्य पर सकारात्मक बदलाव होने का अनुकूल परिदृश्य मौजूद है। हाल ही में एसबीआई की रिसर्च विंग के द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्ष 2014 से 2022 के पिछले आठ वर्षों में आयकर रिटर्न भरने वाले आयकरदाताओं की संख्या और आयकर की प्राप्ति में छलांगे लगाकर वृद्धि हुई है। 2023-24 के 31 दिसंबर तक आयकर रिटर्न रिक्तों ई 8.18 करोड़ के स्तर को पार कर चुका है। जहां पिछले आठ वर्षों में आयकर रिटर्न भरने वाले दोगुने हुए हैं, वहीं आय की असमानता में भी कमी आई है। वित्त वर्ष 2014-22 के दौरान व्यक्तिगत आय असमानता 0.472 प्रतिशत से घटकर 0.402 प्रतिशत हो गई है। इस दौरान 3.5 लाख रुपए के कम आय वाले समूह से 36.3 फीसदी लोग उच्च आय वाले समूह में शामिल हो गए हैं। निःसंदेह वित्तमंत्री के मुद्दियों में देश में कर सुधारों से आयकरदाताओं और आयकर संग्रहण के साथ-साथ जीएसटी में लक्ष्य से भी अधिक वृद्धि की बड़ी अनुकूलताएं हैं। इसके अलावा वित्तमंत्री के पास कुछ और अनुकूलताएं भी हैं, जिनके मद्देनजर वे उपयुक्त ज़रूरी राहत दे सकती हैं। इस वित्त वर्ष 2023-24 में वित्तमंत्री सीतारमण वित्तीय अनुशासन का पालन करते हुए वे अब तक राजकोषीय घाटे को बजट लक्ष्य के मुताबिक जीडीपी के 5.9 तक निर्यात रखते हुए सफलतापूर्वक आगे बढ़ी हैं। यह बात भी स्पष्ट रूप से उभरकर दिखाई दे रही है कि पिछले लोकसभा चुनाव के पहले 2019 के अंतरिम बजट में किसान सम्मान निधि व आयकर राहत देने के लिए ज़रूरी प्रावधान किए गए थे। चूंकि पिछले माह दिसंबर में राज्यों के उत्साहजनक चुनावी नतीजों में कल्याणकारी योजनाओं की भूमिका अहम मानी गई है, इसे ध्यान में रखते हुए वित्तमंत्री का हितसा नहीं होतें हुए हितार्थ कुछ महत्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक कल्याण की योजनाओं के साथ-साथ



छोटे आयकरदाताओं और मध्यम वर्ग को राहत देने के लिए कुछ ज़रूरी प्रावधान कर सकती हैं। नए अंतरिम बजट में छोटे आयकरदाताओं व मध्यम वर्ग को कुछ राहत दी जा सकती है। बजट में किरायती आवासों के लोन पर ब्याज पर सब्सिडी बढ़ सकती है। नई मैनुव्चरिंग यूनिट के लिए आयकर छूट की सीमा बढ़ सकती है। किसानों और महिलाओं के लिए अंतरिम बजट में बड़े ऐलान हो सकते हैं। किसान सम्मान निधि बढ़ाई जा सकती है। नए बजट में राजकोषीय घाटा और विनिवेश लक्ष्य कम हो सकता है। विनिवेश लक्ष्य 50 हजार करोड़ रुपए से नीचे रख जा सकता है। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों (एमएसएमई) को प्रोत्साहनमूलक राहत दी जा सकती है। जहां विनिर्माण क्षेत्र को बढ़ावा देने और रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी करने के लिए सरकार नए अंतरिम बजट से पीएलआई योजना का दायरा बढ़ाते हुए इसे कपड़ा और हस्तशिल्प जैसे क्षेत्रों तक विस्तृत कर सकती है, वहीं रिजल्ट एस्टे सेक्टर को भी प्रोत्साहनमूलक राहत दे सकती है। नए अंतरिम बजट में देश में डिजिटल क्रांति को बढ़ाने से संबंधित मोबाइल सेवा प्रदाताओं सहित विभिन्न उत्पादों, बुनियादी ढांचा क्षेत्र के लिए अधिक पूंजीगत व्यय के प्रावधान भी दिखाई दे सकते हैं। नए बजट में वित्तमंत्री जनकल्याण की ऐसी घोषणाएँ भी कर सकती हैं जो अंतरिम बजट का हिस्सा नहीं होते हुए आगामी पूर्ण बजट की घोषणाओं की संभावनाओं को रेखांकित करते हुए दिखाई दें। यह भी महत्वपूर्ण है कि नए अंतरिम बजट में वित्तमंत्री आयुधान्तार बनाने, प्रधानमंत्री आवास योजना, पेयजल जैसी सामाजिक सरोकार जैसी मदों में खर्च की बढ़ोतरी करते हुए दिखाई

रुपए किए जाने और जिन मकानों में व्यक्ति खुद रहे रहा हो, उस पर लिए गए आवास ऋण पर ब्याज पर कर छूट की सीमा 2 लाख रुपए से बढ़ाकर कम से कम 2.5 लाख रुपए किए जाने की अपेक्षा है। निःसंदेह वित्तमंत्री वर्ग के द्वारा नए अंतरिम बजट में राहत की अपेक्षा इसलिए भी न्यायसंगत है, क्योंकि वित्तभोगी वर्ग के द्वारा दिया गया कुल आयकर पेशेवरों और कारोबारी करदाताओं के वर्ग द्वारा चुकाए गए कुल आयकर से काफी अधिक होता है। वित्तभोगी वर्ग के करदाताओं के कर की कटौती आमदनी अर्जित करने के स्रोत पर अर्जित आय पर की जाती है। इसे टीडीएस के रूप में जाना जाता है। टीडीएस के कारण वित्तभोगी नियमानुसार अपने वेतन पर ईमानदारीपूर्वक आयकर चुकाते हैं और आमदनी को कम बनाने की गुंजाइश नगण्य होती है। इस परिप्रेक्ष्य में एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि वर्ष 2022-23 में देश के 140 करोड़ से अधिक लोगों में से सिर्फ 2.24 करोड़ लोगों ने ही आयकर दिया है। यानी देश की कुल आबादी का 1.60 फीसदी लोग ही आयकरदाता हैं। साथ ही देश में शून्य आयकर देयता वाले आईटी रिटर्न की संख्या भी लगातार बढ़ते हुए वर्ष 2022-23 में 5.16 करोड़ हो गई। करदाता 70 फीसदी आयकर रिटर्न शून्य आयकर देयता बता रहे हैं। इनमें अधिकांश रिटर्न वे हैं जो उद्योग-कारोबार और पेशेवर आयकरदाताओं से संबंधित हैं। चूंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लगातार वित्तीय अनुशासन की दृढ़ता दिखा रहे हैं, ऐसे में यदि केंद्र को अपने घाटे को चालू वर्ष में जीडीपी के 5.9 फीसदी और 2025-26 में 4.5 फीसदी तक लाना है तो ढेर सारी लोक लुभावन योजनाओं के लिए राजकोषीय गुंजाइश सीमित है।

बेरोजगारी की चीखों के बीच नीतियों का ईंतखाब करना भी मुश्किल हो गया है। सरकार गेस्ट टीचर केलिए स्कूलों के गेट नहीं खोल पाई तो इसलिए कि इस नीति की घोषणा ने युवाओं के सुर बिगाड़ दिए। कुछ इसी तरह जेओए-817 की परीक्षा पर तरस खाने का मुद्दा भी रहा। जिस परीक्षा प्रणाली के ऋष्ट तंत्र ने हमीरपुर अधीनस्थ सेवा चयन आयोग को उखाड़ फेंका, उसी के तहत हुई जेओए परीक्षा को बचाने का प्रयास जारी है। ये बेरोजगारी की चीखों को सत्ता अनदेखी नहीं कर सकती, लेकिन रॉजमंडल के बीच नैतिकता का विभाजन स्पष्ट रहा। अब मुख्यमंत्री जेओए परीक्षा को तमाम संशय से दूर रखते हुए नौकरी की बिसात पर अब कुछ ऐसे ही टोटके काग आएंगे। जाहिर है जेओए परीक्षा अगर बरी हो जाए, तो सरकारी रोजगार के आंकड़े कुछ तो काम आएंगे। नौकरी और रोजगार के अवसर पैदा करने का अंतर आज तक हिमाचल की नीतियों को समझ नहीं आया। हालांकि स्टार्टअप के जरिये वर्तमान सरकार की ग्रीन नीति रोजगार के अवसर सृजित करने को तत्पर है या पर्यटन के जरिए सरकार रोजगार को स्वरोजगार का पुष्पमूच्छ सीपना चाहती है, लेकिन एक कहानी निवेशक की भी है। बीबीएन जैसे हिमाचल के सबसे बड़े औद्योगिक केंद्र से अगर कुछ उद्योग पलायन करने का सोच रहे हैं, तो यह रोजगार के बिंदुओं पर भी हताशापूर्ण वातावरण है। आश्चर्य यह है कि प्रदेश की राजनीति और नेताओं के वक्तव्य केवल सरकारी नौकरी की बात करते हैं, जबकि रोजगार की संभावना के अन्य क्षेत्र खामोश हैं। सरकार गांव के द्वार भी ऐसी ही घोषणाएं चुन रही है, जहां साधारण कालेज को स्नातकोत्तर

बनाने की उपलब्धि गिनी जा रही है। हमें लगता है जिस दिन हमारे मंत्री-मुख्यमंत्री युवाओं के प्रयास से शुरू हो रहे व्यवसायों, शोरूमों, बस-टेक्सी संचालन या पर्यटन इकाइयों का आगे बढ़कर शुभारंभ करेंगे, हिमाचल के आदर्श और उदाहरण बदल जाएंगे। हम स्कूलों-कालेजों के वार्षिक समारोहों में नेताओं को बुलाकर बच्चों के मन में सियासी प्रभाव का आभामंडन कर रहे हैं, जबकि होना यह चाहिए कि वहां निजी क्षेत्र के प्रमुख व्यावसायियों, युवाओं, डाक्टरों तथा नामी व्यक्तियों को बुलाकर रोजगार की क्षमता की नई पैरवी शुरू की जाए। आश्चर्य यह कि बेरोजगारी की चीखों को सत्ता अनदेखी नहीं कर सकती, लेकिन रॉजमंडल के बीच नैतिकता का विभाजन स्पष्ट रहा। अब मुख्यमंत्री जेओए परीक्षा को तमाम संशय से दूर रखते हुए नौकरी की बिसात पर अब कुछ ऐसे ही टोटके काग आएंगे। जाहिर है जेओए परीक्षा अगर बरी हो जाए, तो सरकारी रोजगार के आंकड़े कुछ तो काम आएंगे। नौकरी और रोजगार के अवसर पैदा करने का अंतर आज तक हिमाचल की नीतियों को समझ नहीं आया। हालांकि स्टार्टअप के जरिये वर्तमान सरकार की ग्रीन नीति रोजगार के अवसर सृजित करने को तत्पर है या पर्यटन के जरिए सरकार रोजगार को स्वरोजगार का पुष्पमूच्छ सीपना चाहती है, लेकिन एक कहानी निवेशक की भी है। बीबीएन जैसे हिमाचल के सबसे बड़े औद्योगिक केंद्र से अगर कुछ उद्योग पलायन करने का सोच रहे हैं, तो यह रोजगार के बिंदुओं पर भी हताशापूर्ण वातावरण है। आश्चर्य यह है कि प्रदेश की राजनीति और नेताओं के वक्तव्य केवल सरकारी नौकरी की बात करते हैं, जबकि रोजगार की संभावना के अन्य क्षेत्र खामोश हैं। सरकार गांव के द्वार भी ऐसी ही घोषणाएं चुन रही है, जहां साधारण कालेज को स्नातकोत्तर

बनाने की उपलब्धि गिनी जा रही है। हमें लगता है जिस दिन हमारे मंत्री-मुख्यमंत्री युवाओं के प्रयास से शुरू हो रहे व्यवसायों, शोरूमों, बस-टेक्सी संचालन या पर्यटन इकाइयों का आगे बढ़कर शुभारंभ करेंगे, हिमाचल के आदर्श और उदाहरण बदल जाएंगे। हम स्कूलों-कालेजों के वार्षिक समारोहों में नेताओं को बुलाकर बच्चों के मन में सियासी प्रभाव का आभामंडन कर रहे हैं, जबकि होना यह चाहिए कि वहां निजी क्षेत्र के प्रमुख व्यावसायियों, युवाओं, डाक्टरों तथा नामी व्यक्तियों को बुलाकर रोजगार की क्षमता की नई पैरवी शुरू की जाए। आश्चर्य यह कि बेरोजगारी की चीखों को सत्ता अनदेखी नहीं कर सकती, लेकिन रॉजमंडल के बीच नैतिकता का विभाजन स्पष्ट रहा। अब मुख्यमंत्री जेओए परीक्षा को तमाम संशय से दूर रखते हुए नौकरी की बिसात पर अब कुछ ऐसे ही टोटके काग आएंगे। जाहिर है जेओए परीक्षा अगर बरी हो जाए, तो सरकारी रोजगार के आंकड़े कुछ तो काम आएंगे। नौकरी और रोजगार के अवसर पैदा करने का अंतर आज तक हिमाचल की नीतियों को समझ नहीं आया। हालांकि स्टार्टअप के जरिये वर्तमान सरकार की ग्रीन नीति रोजगार के अवसर सृजित करने को तत्पर है या पर्यटन के जरिए सरकार रोजगार को स्वरोजगार का पुष्पमूच्छ सीपना चाहती है, लेकिन एक कहानी निवेशक की भी है। बीबीएन जैसे हिमाचल के सबसे बड़े औद्योगिक केंद्र से अगर कुछ उद्योग पलायन करने का सोच रहे हैं, तो यह रोजगार के बिंदुओं पर भी हताशापूर्ण वातावरण है। आश्चर्य यह है कि प्रदेश की राजनीति और नेताओं के वक्तव्य केवल सरकारी नौकरी की बात करते हैं, जबकि रोजगार की संभावना के अन्य क्षेत्र खामोश हैं। सरकार गांव के द्वार भी ऐसी ही घोषणाएं चुन रही है, जहां साधारण कालेज को स्नातकोत्तर

राय पलट के नीतीश एनडीए में

बीते बुधवार को प्रधानमंत्री मोदी, गृहमंत्री अमित शाह और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के बीच करीब तीन घंटे की बैठक प्रधानमंत्री आवास में हुई थी। वह असाधारण बैठक थी। उनके समक्ष बिहार पर सर्वे की एक रपट भी थी, जो भाजपा ने कराया था। सर्वे का निष्कर्ष था कि 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा, अपने सभी घटक दलों समेत, 20-22 सीटें ही जीत सकती है। सर्वे अयोध्या राम मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा से पहले कराया गया था। सर्वे में यह भी सामने आया कि उसके प्रभाव से 5-7 सीटें ही बढ़ सकती हैं। 12019 में भाजपा ने जद-यू के साथ 40 में से 39 सीटें जीती थीं। जाहिर है कि विमर्श का बिंदु बिहार और नीतीश कुमार रहे होंगे। अंततः यह तय हुआ कि विपक्षी गठबंधन ‘ईंडिया’ का सूत्रधार ही पाला बदल कर भाजपा से मिल जाए, तो चुनावी फायदा हो सकता है। कमोबेश अति पिछड़ा वर्ग के ‘सरप्लस वोट’ भी भाजपा के पक्ष में आ सकते हैं। लंबे विमर्श के बाद प्रधानमंत्री ने नए गठबंधन को ‘ओके’ कह दिया। उसके बाद ही तय हो गया था कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार एक बार फिर ‘पलटी’ मार कर भाजपा से जुड़ेंगे। जो पटकथा लिखी गई थी, उसी के मद्देनजर नीतीश ने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा राज्यपाल को सौंपा। नतीजतन कथित महागठबंधन की सरकार ढह गई। इस्तीफा देने के बाद नीतीश ने मीडिया से पुष्टि की और कहा कि गठबंधन में काम नहीं हो पा रहा था। यहां और वहां के लोगों को तकलीफ थी, लिहाजा हमने गठबंधन छोड़ दिया है। अब नया गठबंधन बन रहा है। आप खुद देखिएगा। बहरहाल रविवार को ही नीतीश कुमार एक एनडीए मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ग्रहण करना महज औपचारिकता थी। उनके साथ भाजपा के दो उपमुख्यमंत्रियों ने भी शपथ ली है। सम्राट चौधरी और विजय सिन्हा के नाम लिए गए। सम्राट बिहार भाजपा के अध्यक्ष भी हैं। बिहार का राजनीतिक परिदृश्य पूरा ही बदल गया और लालू यादव, कांग्रेस खेमा मुकदर्शक ही बने रहे। इस बार नीतीश का मोहभंग होने और पलटी मार कर एनडीए में लौटने में सिर्फ षेड साल लगे। नीतीश अगस्त, 2022 में भाजपा को छोड़ कर लालू यादव के भेध में गए थे। पलटी मारने की दलीलें नीतीश की वही रही हैं, जो 2022 और उससे पहले 2017 में थीं। आश्चर्य है कि भाजपा और राजद दोनों ही जद-यू को तोड़ने की साजिश रचती रहती हैं और नीतीश बार-बार उन्हीं के साथ सरकार बनाते रहे हैं। दरअसल एक सवाल जनादेश, सरकार, पलटीमार राजनीति और लोकतंत्र को लेकर है। गौररत्न है कि 1995 से नीतीश कुमार ने विधायक का चुनाव ही नहीं लड़ा है। वह लगातार विधान परिषद में रहे हैं। उनके दलों को भी बहुमत का जनादेश कभी भी नहीं मिला है। फिर भी वह 9वां बार मुख्यमंत्री बने हैं। यह देश का राजनीतिक रिकॉर्ड है कि एक ही नेता ने, एक ही कार्यकाल के दौरान, तीन-चार बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली है। सवाल है कि नीतीश कुमार में ऐसा क्या आकर्षण है कि भाजपा और राजद दोनों ही उन्हें ‘पलटी’ मारने को समर्थन देते रहे हैं और उन्हें मुख्यमंत्री भी बनवा देते हैं? क्या नीतीश बिहार के राजनीतिक समीकरणों की विवशता हैं कि बहुमत न होने के बावजूद वह मुख्यमंत्री बने हुए हैं? क्या यह पलटीमार राजनीति की अवसरवादिता नहीं है? मौजूदा जनादेश 2020 में भाजपा-जदयू को मिला था, क्योंकि दोनों ने साझा तौर पर चुनाव लड़ा था। उसके बाद का घटनाक्रम देश के सामने है। यह कैसा लोकतंत्र है कि बहुमत का जनादेश पाए बिना ही एक राजनेता लगातार कई सालों से बिहार का मुख्यमंत्री हैं? भाजपा और राजद भी बराबर की जिम्मेदार हैं, क्योंकि बहुमत उनके पक्ष में भी नहीं रहा है। चूंकि बिहार में लंबे अंतराल से ‘गुगाड़ की सरकार’ काम कर रही है, तो वह रसातल की ओर नहीं जाएगा, तो क्या स्थिति होगी? बिहार का देश का सबसे गरीब और पिछड़ा राज्य है।

वहां सार्वजनिक होलैंड ने आत्महत्या कर ली थी। सारा देश हैरान नहीं, परेशान भी था कि अखिर इसकी भरपाई कैसे की जाएगी। पहले ही इसे ढूंढते-ढूंढते तीन अन्य नेताओं के नाम पर राष्ट्रीय अवकाश देना पड़ा था। राष्ट्रीय होलैंड के आत्महत्या ने देश के सार्वजनिक क्षेत्र, तमाम सरकारी कर्मचारियों और सरकारी दफ्तरों के पहली बार कान खोल दिए थे, बल्कि इसखबर से आंखें फटी की फटी रह गईं। कोई मानने को तैयार ही नहीं था कि एक दिन ऐसी भी स्थिति आ सकती है। सरकारी छुट्टी तो बड़े ही नसीबों वाली होती है, इसके बहाने देश का एक पूरा दिन लंबी तान कर सो सकता है। दफ्तर के बाबू से अधिकारी तक सरकारी छुट्टी के पांव पर लंबे अवकाश पर निकल सकते हैं। सरकारी फाइलें बढ़ती सार्वजनिक छुट्टियों के तहखानों में आराम करती हुई चौक गईं, ‘यह किसकी बुरी नजर हम पर लग गई। अगर

छुट्टियां ही मरने लगीं, तो सारा दफ्तर हम बेचारी फाइलों की इज्जत नोच लेगा। वैसे भी हमारे ऊपर दफ्तर के हरामीपन की खरोंचे, बहानों की सूझयां, बदलती तारीखों और कानूनों की समझ इनती घातक हो चुकी है कि सिर्फ सार्वजनिक अवकाश में ही खुद को ढांप पाती हैं। ऐसे में होना तो यह चाहिए कि आईदा सार्वजनिक अवकाश की घोषणा के बजाय यह बताया जाए कि महीने के किस-किस दिन में कार्यालय चलेगा। वैसे भी हर दिन दफ्तर कहाँ चलते हैं। वे भाग्यशाली होते हैं जिन्हें कार्यालय चलते हुए मिल जाते हैं या आवेदन से आवश्यक दस्तावेज हासिल करने की हर सीट पर कर्मचारी-अधिकारी मिल जाते हैं।’ पहली बार सरकारी अवकाश की आत्महत्या पर सरकारी दफ्तर की फाइलों की दशा पता चली। यह दफ्तर दरअसल

विचार

चीन की उल्फत में डूब कर भारत के विरोध में उठते मालदीव के एहसान फरामोश हुक्मरानों को भारतीय सेना के उन शूरवीर पैरा कमांडोज व नौसेना तथा वायुसेना का मरहून-ए-मिन्नत रहना होगा जिन्होंने सन् 1988 में मालदीव में तख्तापलट के मंसूबों को ध्वस्त करके वहां जम्हूरियत को दोबारा कायम कर दिया था’

‘आपरेशन कैक्टस’ भारतीय सेना की दास्तान-ए-शुजात की वो जांबाजी जब हिंदोस्तान के रणबांकुरों ने जोखिम भरे सैन्य आपरेशन को अंजाम देकर मालदीव को आंतकियों से मुक्त कराया था। देश के प्रथम ‘परमवीर चक्र’ विजेता हिमाचल प्रदेश के मेजर ‘सोमनाथ शर्मा’ के भाई जनरल ‘वीएन शर्मा’ सन् 1988 में भारतीय थलसेना के प्रमुख थे। उस वक़्त श्रीलंका के आतंकी समूह ‘पीपल लिबरेशन ऑफ तमिल ईलम’ के लड़ाकों ने पर्यटकों का भेष धारण करके समंदर में बसे देश मालदीव पर हमला करके वहां तख्तापलट को अंजाम दे दिया था। आंतकियों के घेरे में फंस चुके मालदीव के तत्कालीन राष्ट्रपति ‘मौमून अब्दुल गयूम’ ने अपने मुल्क को उस आतंकी हमले से बचाने के लिए अमरीका, ब्रिटेन व मलेशिया जैसे कई देशों से मदद की गुहार लगाई, मगर मालदीव के एयरपोर्ट, टीवी टावर व रेडियो स्टेशन जैसे बुनियादी ढांचे पर कब्जा कर चुके आंतकियों का मुकाबला करने की जहमत किसी भी मुल्क ने नहीं उठाई थी। आंतकियों के तर्जुमान पाकिस्तान से भी मालदीव ने मदद के लिए राफ़ता किया था, मगर निराशा हाथ लगी। जब अब्दुल गयूम के लिए सवाल मालदीव की इज्जत-ए-नफ़ज का बना, तब ब्रिटेन की तत्कालीन प्रधानमंत्री ‘मारेग्रेट थैचर’ ने मालदीव को भारत से मदद मांगने का मश़ावित दे डाला था। आखिर मालदीव के सदर मौमून अब्दुल गयूम की गुज़ारिश पर भारत की तत्कालीन हुकूमत व भारतीय सेना हरकत में

आई। मालदीव को उस आतंकी हमले से आजाद कराने के लिए भारतीय सेना ने ‘आपरेशन कैक्टस’ लॉच किया। सेना की 50वीं ‘पैराशूट ब्रिगेड’ व ‘छह पैराशूट’ यूनिट तथा ‘17वीं पैराशूट फ़ील्ड रेजिमेंट’ के जवान ब्रिगेडियर ‘फ़ारूक बुलसारा’ की कमान में तीन नवंबर 1988 की रात को मालदीव के ‘हुलहुले’ एयरपोर्ट पर उतरे तथा समुद्री रास्ते से मालदीव की राजधानी ‘माले’ पहुंचे। भीषण गोलीबारी में 19 आतंकी मौत को हलाक करके भारतीय कमांडोज ने मालदीव में आतंकी तख्तापलट की मंसूबाबंदी को नाकाम करके राष्ट्रपति मौमून अब्दुल गयूम व उप रक्षामंत्री ‘इल्यास इब्राहिम’ सहित कई लोगों को 18 घंटों के भीतर सुरक्षित निकाल लिया था। ऑपरेशन कैक्टस की कामयाबी के पीछे भारतीय सेनाध्यक्ष जनरल वीएन शर्मा की माकूल रणनीति व ब्रिगेडियर ‘फ़ारूक बुलसारा’ का उत्कृष्ट सैन्य नेतृत्व तथा सैनिकों का अदम्य साहस शामिल था। आपरेशन कैक्टस में भारतीय जांबाज कमांडोज के साथ भारतीय नौसेना व वायुसेना ने भी अहम किरदार अदा किया था। नौसेना के आईएनएस ‘गोदावरी’ व बेतवा भी समंदर में सक्रिय थे। भारतीय सैनिकों के ख़ोफ़ से मालदीव में तख्तापलट का मुख्य साजिशकर्ता ‘अब्दुल्ल लुत्फ़ी’ एक समुद्री जहाज को अगवा करके फरार हो रहा था। उसे भारतीय नेवी ने हिरासत में लेकर मालदीव की हुकूमत के हवाले कर दिया था। भारतीय पैराशूट रेजिमेंट के जवानों ने आंतकियों पर इतना माकूल प्रहार किया था कि मालदीव में आतंकी हमला या तख्तापलट की हिमाकत दोबारा नहीं हुई। मौजूदा दौर में भारत का एहसान भूलकर मालदीव चर्चा का मरकज बना हुआ है। हाल ही में चीन समर्थक ‘मोहम्मद मुइज्जु’ मालदीव के राष्ट्रपति चुने गए हैं। मालदीव में इकतदार हासिल करते ही चीन की आस्तीन में बैठकर भारत विरोधी रूख अख़्तिार करके मो. मुइज़्जु भारत को आंख दिखा रहा है, लेकिन 35 वर्ष पूर्व मालदीव की हुकूमत पर जब तख्तापलट की

शव संवाद-28

सरकारी अवकाशों की संख्या में खुद को ढांपता रहा है। हर छुट्टी की चादर चढ़ाकर दफ्तर मजार सिद्ध होने लगा है। कब खुश होगा पता नहीं, लेकिन सार्वजनिक अवकाश अब एक चादर है जिसे ढांप कर दफ्तर मजार हो जाता है। खैर सार्वजनिक अवकाश की आत्महत्या जिन परिस्थितियों में हुई थी, उनके लिए हुकूमत भी दोषी है।

राज्य के अवकाश घोषित करते हुए यह नहीं सोचा कि कहीं इसके आगे सेंकेंड सैटर डे या पीछे संडे को जाया तो नहीं होना पड़ रहा। कम से कम तीन बार सार्वजनिक छुट्टी रविवार को लील गई, ऊपर से लांग वीक एंड का मजा किरकिरा हो गया। ऐसे में अपमानित सी सरकारी छुट्टी एक ओर बेमौत

इतेफाक देखिए पहली बार बुद्धिजीवी किसी मरी हुई शौ में अपने प्राण ढूंढने लगा है। पहले भी बुद्धिजीवी की वजह से मरी हुई सरकारी छुट्टियां बच गई थी, लिहाजा वह अपनी सांस चढ़ाकर इसे बचा रहा था। आखिर एक सरकारी छुट्टी का सवाल था। जीवित हो जाए तो बुद्धिजीवी घर में पसर कर सरकार को आराम से कोस सकता था या कम से कम अगली छुट्टियों की सूची संवार लेगा। बड़े दिनों से उसने अपने पीएफ एकाउंट, वेतन-भत्तों और विभागीय विसंगतियों पर माथापच्ची नहीं की थी। विडंबना यह रही कि इस बार सार्वजनिक छुट्टी उठ नहीं पाई। थक हार कर बुद्धिजीवी ने मरी हुई छुट्टी का शव अपने कंधे पर उठाया, लेकिन वह उसे जलाना नहीं चाहता

मरी, ऊपर से दफ्तरी बाबुओं ने तोहमत लगा-लगा कर मार दिया। अब मरी, ऊपर से दफ्तरी बाबुओं ने तोहमत लगा-लगा कर मार दिया। अब मरी, ऊपर से दफ्तरी बाबुओं ने तोहमत लगा-लगा कर मार दिया। अब

भारत का एहसान भूल रहा मालदीव

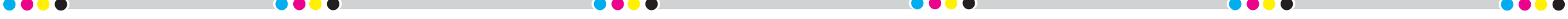


गर्दिश के बादल मंडरा चुके थे, यदि उस वक़्त भारतीय सेना ने मालदीव को बचाने का साहस न किया होता तो शाहद पर्यटन के लिए मशहूर मालदीव आतंकियों की दारुल हुकूमत बन जाता। इस बात में भी कोई दो राय नहीं है कि पिछले कुछ समय से मालदीव पर मजहबी कट्टावाद का साथी पड़ चुका है। वर्ष 2022 में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर माले के फुटबल मैदान में योग कर रहे भारतीय मूल के लोगों पर भीड़ ने मजहबी आक्रोश में आकर हमला कर दिया था। सात जनवरी 2023 को मालदीव की सरकार के तीन वजीरों ने भारत के प्रधानमंत्री के बारे में स्थिरता को कायम रखने के लिए भारत के कुछ सैनिक वहां रहते हैं। भारत के उन 88 सैनिकों को राष्ट्रपति मुइज़्जु 15 मार्च तक मालदीव छोड़ने का फरमान जारी कर चुके हैं। हमारे देश के हुक्मरानों को मालदीव की इस कारकटनी पर संज्ञान लेना

में भारत अग्रणी था। मालदीव की सेना ‘मालदीवियन नेशनल डिफेंस फोर्स’ की ट्रेनिंग कई वर्षों से भारतीय सेना ही करवाती है। सन् 2004 में मालदीव में विनाशकारी सुनामी के बाद वहां मदद भेजने में भी भारत ने पहल की थी। सन् 2014 में मालदीव का ‘वाटर ट्रीटमेंट’ आग लगने से खाक हो गया था। पेयजल के संकट से जूझ रहे मालदीव की आवाम को भारत ने ‘आपरेशन ‘नीर’ चलाकर पेयजल की आपूर्ति की थी। सन् 2010 व 2013 में भारत ने मालदीव को दो हैलिकॉप्टर तथा सन् 2020 में एक विमान भी तोहफे में दिया था। मालदीव की राजनीतिक स्थिरता को कायम रखने के लिए भारत के कुछ सैनिक वहां रहते हैं। भारत के उन 88 सैनिकों को राष्ट्रपति मुइज़्जु 15 मार्च तक मालदीव छोड़ने का फरमान जारी कर चुके हैं। हमारे देश के हुक्मरानों को मालदीव की इस कारकटनी पर संज्ञान लेना

होगा। ‘इंडिया आउट’ का नारा देकर मालदीव की हुकूमत पर काबिज होने वाले मो. मुइज़्जु की ईगन संग रफाकत मालदीव को महंगी खासित होगी, क्योंकि चीन के सबसे बड़े कर्जदारों में मालदीव भी शामिल है। बहरहाल चीन की उल्फत में डूब कर भारत के विरोध में उठते मालदीव के एहसान फरामोश हुक्मरानों को भारतीय सेना के उन शूरवीर पैरा कमांडोज व नौसेना तथा वायुसेना का मरहून-ए-मिन्नत रहना होगा जिन्होंने सन् 1988 में मालदीव में तख्तापलट के मंसूबों को ध्वस्त करके वहां जम्हूरियत को दोबारा कायम कर दिया था। आपरेशन कैक्टस को अंजाम देकर भारतीय कमांडोज ने दुनिया को एहसास करा दिया था कि विषय की बेहतरीन स्पेशल फोर्स भारत के पास है। यह देश के लिए गर्व की बात है।

प्रातप सिंह पटियाल



अगले वित्त वर्ष में भी सात प्रतिशत रह सकती है जीडीपी विकास दर

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली । कोरोना महामारी और उसके ठीक बाद भू-राजनीतिक उथल-पुथल से जहां दुनिया की कई बड़ी अर्थव्यवस्था दो प्रतिशत की विकास दर हासिल करने के लिए संघर्ष कर रही हैं, वहीं, भारतीय अर्थव्यवस्था आगामी वित्त वर्ष 2024-25 में भी सात प्रतिशत की विकास दर हासिल कर सकती है। इतना ही नहीं अगले तीन साल में ही भारतीय अर्थव्यवस्था पांच ट्रिलियन डॉलर की हो जाएगी और भारत आर्थिक आकार के लिहाज से अमेरिका व चीन के बाद तीसरा सबसे बड़ा देश बन जाएगा।

2030 तक सात ट्रिलियन डॉलर होगी अर्थव्यवस्था

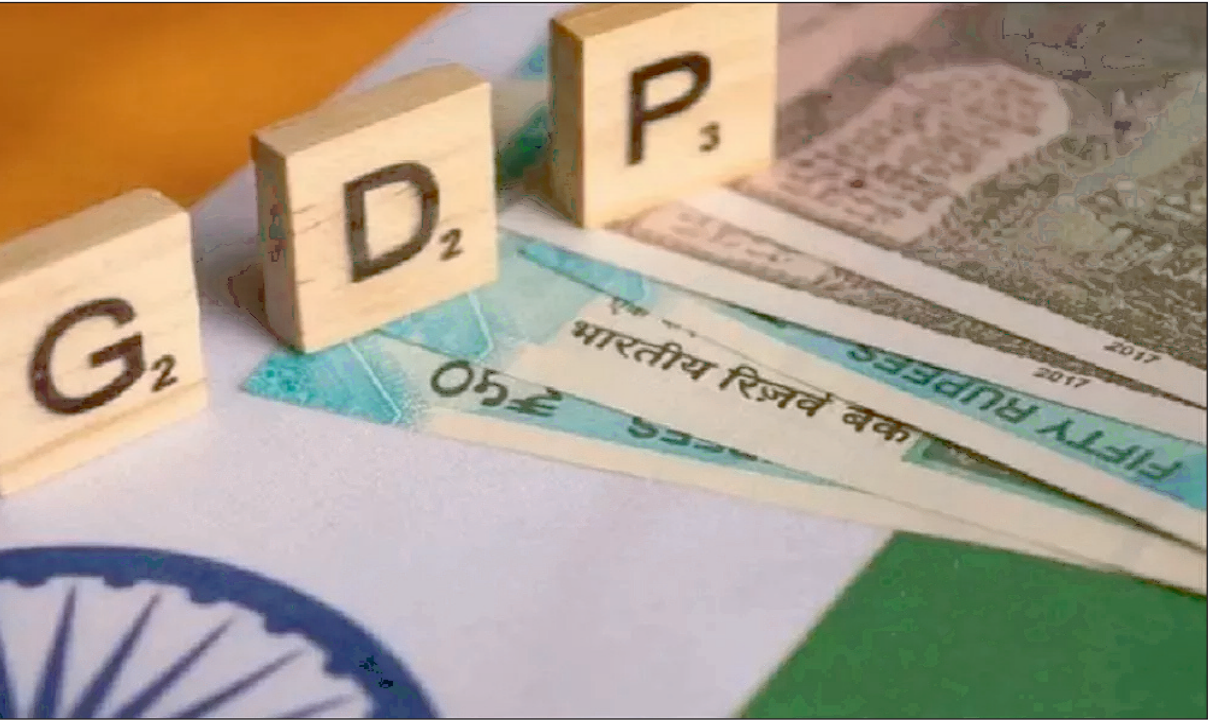
वर्ष 2030 तक भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार सात ट्रिलियन डॉलर का होगा। आगामी वित्त वर्ष के लिए एक फरवरी को पेश होने वाले अंतरिम बजट से ठीक तीन दिन पहले वित्त मंत्रालय की तरफ से भारतीय अर्थव्यवस्था पर जारी विस्तृत रिपोर्ट में इन बातों का खुलासा किया गया है। अंतरिम बजट की वजह से अभी आर्थिक सर्वेक्षण नहीं आया। आर्थिक सर्वेक्षण जुलाई में पेश होने वाले पूर्ण बजट से पहले पेश किया जाएगा।

विकास दर 7.3 प्रतिशत रहने का अनुमान

वित्त मंत्रालय की रिपोर्ट के मुताबिक, चालू वित्त वर्ष 2023-24 में सरकार ने जीडीपी विकास दर 7.3 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया है और अगले वित्त वर्ष में भी अगर हमारी विकास दर अनुमान के मुताबिक सात प्रतिशत रहती है तो कोरोना काल के बाद चौथे साल भी हम सात प्रतिशत की दर से विकास करेंगे। अच्छी बात यह है कि चालू वित्त वर्ष के अप्रैल-दिसंबर में देश की खुदरा महंगाई दर 5.5 प्रतिशत रही और आने वाले महीनों में खुदरा महंगाई दर में कमी का अनुमान है।

इन सेक्टरों में आई मजबूती

वित्त मंत्रालय की रिपोर्ट के मुताबिक कोरोना महामारी और वैश्विक उथल-पुथल की बड़ी चुनौतियों के बीच भारत इसलिए विकास कर रहा है क्योंकि पिछले 10 सालों में सरकार की आर्थिक नीतियों ने हमारी



वित्त मंत्रालय की रिपोर्ट में अर्थव्यवस्था की मजबूत तस्वीर के बीच कुछ चीजों को लेकर आशंका भी जाहिर की गई है जो हमारी विकास गति को प्रभावित कर सकती है। एक आशंका वैश्विक स्तर पर घटते व्यापार को लेकर है और मैन्यूफैक्चरिंग पर वैश्विक निवेश संकुचित हो रहा है। लेकिन ऐसा भी नहीं है कि भारत के लिए मौके की कमी है। लाल सागर का व्यवधान भी भारत के लिए चुनौती है क्योंकि इससे हमारा निर्यात प्रभावित होने जा रहा है। रिपोर्ट में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) सर्विस सेक्टर के लिए बड़ी चुनौती बताई गई है।

रिपोर्ट में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) सर्विस सेक्टर के लिए बड़ी चुनौती बताई गई है। इन सबके अलावा ऊर्जा के परंपरागत माध्यम को छोड़ नए माध्यम को अपनाना भी एक चुनौती है। हालांकि भारत इस दिशा में अपने लक्ष्य को लगातार हासिल कर रहा है। दिसंबर 2019 में घरे (हाउसहोल्ड) की शुद्ध वित्तीय संपदा जीडीपी के 52.8

प्रतिशत के बराबर थी जो दिसंबर, 2023 में जीडीपी के 65.5 प्रतिशत के बराबर हो गई

जिनमें 2.1 लाख करोड़ राशि जमा है इनमें 55 प्रतिशत महिलाएं हैं। वर्ष 2014 में चालू खाते का घाटा जीडीपी के दो प्रतिशत के पास पहुंच गया था और महंगाई दहाई अंक में थी, अभी चालू खाते का घाटा जीडीपी के एक प्रतिशत से थोड़ा अधिक है।

अपने हेल्थ इंश्योरेंस ने नहीं हैं खुश तो आसानी से करें पोर्ट, जानिए स्टेप बाय स्टेप गाइड



Health Insurance Portability अपनी हेल्थ का ध्यान रखने और मेडिकल खर्चों को कम करने के लिए हेल्थ इंश्योरेंस () काफ़ी जरूरी हो गया है। आज कई इंश्योरेंस कंपनी हेल्थ इंश्योरेंस देते हैं। ऐसे में कई बार हमें किसी कंपनी की सर्विस पसंद नहीं आती है। इस स्थिति में आप आसानी से अपनी इंश्योरेंस पॉलिसी को पोर्ट कर सकते हैं। पढ़ें पूरी खबर ..

नई दिल्ली। वर्तमान में निवेश के ऑप्शन में हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी भी शामिल हो गया है। इस पॉलिसी में निवेश करना काफी आसान हो गया है। ऐसे में कई बार हम जल्दबाजी में किसी गलत पॉलिसी में निवेश कर देते हैं जिससे बाद में हमें नुकसान का सामना करना पड़ता है। अगर आप भी अपने हेल्थ इंश्योरेंस (Health Insurance) ख़ुश नहीं हैं तो आप आसानी से इसे पोर्ट करा सकते हैं। जिस प्रकार हम सिम कार्ड को पोर्ट करते हैं, ठीक उसी प्रकार हम हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी को भी पोर्ट (Portability of Health Insurance) कर सकते हैं।

कैसे करें हेल्थ इंश्योरेंस पोर्ट

आप जिस कंपनी ने अपनी पॉलिसी को पोर्ट करवाना चाहते हैं उसमें पॉलिसी रिन्यूअल की तारीख से 45 दिन पहले पोर्ट के लिए आवेदन दें। इसके बाद जब कंपनी द्वारा आपको प्रपोजल और पोर्टबिलिटी फॉर्म भेजा जाएगा।

हांगकांग की अदालत ने चीन की सबसे बड़ी रियल एस्टेट कंपनी China Evergrande Group को बंद करने के आदेश दिए हैं। कंपनी पर 300 बिलियन डॉलर से अधिक की देनदारी है। कंपनी पिछले दो साल से अपनी देनदारियां चुकाने के प्रयास में नाकाम रही है। हांगकांग की अदालत के इस आदेश ने चीन में रियल एस्टेट और कंपनी के निवेशकों को जबरदस्त झटका दिया है।

हांगकांग। हांगकांग की एक अदालत ने सोमवार को प्रोपर्टी की दिग्गज कंपनी China Evergrande Group को बंद करने के आदेश दिए हैं। इस आदेश के बाद से चीन में निवेशकों को जबरदस्त झटका लगा है। कंपनी पर 300 बिलियन डॉलर से अधिक की देनदारी है। कंपनी पिछले दो साल से अधिक समय से अपनी देनदारी को खत्म करने में असफल रही है, जिसके बाद जस्टिस लिंडा चैन ने यह आदेश जारी किया है।

क्या चीन में मान्य होगा फैसला ?

समाचार एजेंसी रॉयटर्स के मुताबिक, सोमवार को जस्टिस चैन ने अदालत में कहा,

नई इंश्योरेंस कंपनी आईआरडीआई की वेबसाइट की मदद से आपके पॉलिसी से जुड़ी डिटेल्स (जैसे- क्लेम हिस्ट्री, मेडिकल रिकॉर्ड्स आदि) जान सकती है।

बता दें कि अगर कंपनी को यह सभी जानकारी नहीं मिलती है तो वह हेल्थ इंश्योरेंस पोर्टेबिलिटी को होल्ड पर रख सकती है। इंश्योरेंस कंपनी को जैसे ही आपके जरूरी डॉक्यूमेंट्स मिल जाते हैं वह 15 दिन के अंदर आपके पोर्टेबिलिटी रिकवेस्ट को एक्सेप्ट या रिजेक्ट होने की सूचना दे देगी।

ये डॉक्यूमेंट्स है जरूरी

हेल्थ इंश्योरेंस रिन्यू का नोटिस नो क्लेम बोनस का सर्टिफिकेट अगर कोई क्लेम किया है तो उसकी डिस्चार्ज समरी फॉलो-अप रिपोर्ट मेडिकल हिस्ट्री, रिपोर्ट और कॉपी

क्या-क्या होता है पोर्ट

पॉलिसी खरीदने के बाद का 30 दिन का वेंटिंग पीरियड ट्रांसफर हो जाता है पुरानी बीमारियों के लिए वेंटिंग पीरियड पोर्ट होता है कोई खास बीमारी के लिए वेंटिंग पीरियड भी ट्रांसफर हो जाता है पुरानी पॉलिसी का नो क्लेम बोनस भी पोर्ट होता है।

'अब अदालत के लिए यह कहने का समय आ गया है कि बहुत हो गया।' यह देखना दिलचस्प होगा कि हांगकांग की अदालत के इस फैसले को क्या चीन की अदालतें मान्यता देंगी ? वहीं, ऑफशोर निवेशकों का ध्यान इस बात पर होगा कि किसी कंपनी के विफल होने पर चीनी अधिकारी विदेशी ऋणदाताओं के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। इसके साथ ही जस्टिस चैन ने अल्वारेज और मार्सल को परिसमापक नियुक्त किया है। इस नियुक्ति को लेकर उनका कहना था कि यह सभी लेनदारों के हित में होगी क्योंकि यह ऐसे समय में एवरग्रांडे के लिए एक नई पुनर्गठन योजना का कार्यभार संभाल सकता है जब इसके अध्यक्ष हुई के यान पर संदिग्ध अपराधों की जांच चल रही है।

Evergrande Group की संपति

Evergrande Group के पास 240 बिलियन डॉलर की संपति है। कंपनी ने चीन की रियल एस्टेट सेक्टर को साल 2021 में संकट में डाल दिया था। हांगकांग की अदालत का यह फैसला पहले से संकट में घिरे रियल एस्टेट मॉकेंट में और भी अनिश्चितता पैदा करने वाला है। एवरग्रांडे के मुख्य कार्यकारी सिउ शॉन



ने चीनी मीडिया को बताया कि कंपनी यह सुनिश्चित करेगी कि परिसमापन आदेश के बावजूद गृह निर्माण परियोजनाएं अभी भी वितरित की जाएंगी। उन्होंने कहा कि इस फैसले से एवरग्रांडे की तटवर्ती और अपतटीय इकाइयों के संचालन पर कोई असर नहीं पड़ेगा। हमारी प्रार्थमिकता यह है कि जितना संभव हो सके व्यवसाय को बरकरार रखा

जाए, पुनर्गठित किया जाए और चालू रखा जाए। हम लेनदारों और अन्य हितधारकों को मूल्य को संरक्षित करने और लौटाने के लिए एक संरचित दृष्टिकोण अपनाएंगे।

टिफनी वॉंग, अल्वारेज एंड मार्सल के प्रबंधनिदेशक

एवरग्रांड और सहायक कंपनियों की ट्रेडिंग बंद

सुनवाई से पहले एवरग्रांडे के शेयर

20% तक नीचे कारोबार कर रहे थे। फैसले के बाद चाइना एवरग्रांडे और उसकी सूचीबद्ध सहायक कंपनियों चाइना एवरग्रांडे न्यू एनर्जी व्हीकल ग्रुप और एवरग्रांडे प्रॉपर्टी सर्विसेज में ट्रेडिंग रोक दी गई। चीन की पोपर्टी बाजार पिछले नौ साल में सबसे खराब दौर पर है। ऐसे में हांगकांग की अदालत का यह फैसला निवेशकों के लिए किसी झटके से कम नहीं है।

बजट में वित्तीय संस्थानों से 70 हजार करोड़ मिलने का रखा जाएगा लक्ष्य



चालू वित्त वर्ष के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और वित्तीय संस्थानों के अच्छे तिमाही परिणाम आने से उनके द्वारा सरकार को दिए जाने वाले लाभांश में अच्छी खासी बढ़ोतरी होने की उम्मीद है। वित्त वर्ष 2022-23 में सरकार ने आरबीआई और सार्वजनिक क्षेत्र के वित्तीय संस्थानों से 40953 करोड़ रुपये जुटाए थे। आइए इसके बारे में जान लेते हैं।

नई दिल्ली। सरकार अगले वित्त वर्ष में आरबीआई और दूसरे वित्तीय संस्थानों से लगभग 70 हजार करोड़ रुपये मिलने का लक्ष्य लेकर चलेगी। चालू वित्त वर्ष में

सरकार ने वित्तीय संस्थानों के लाभांश से मिलने वाली रकम का लक्ष्य 48 हजार करोड़ रुपये रखा था। हालांकि अकेले आरबीआई ने 87,416 करोड़ रुपये का लाभांश देकर इस लक्ष्य को काफी पीछे छोड़ दिया।

चालू वित्त वर्ष के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और वित्तीय संस्थानों के अच्छे तिमाही परिणाम आने से उनके द्वारा सरकार को दिए जाने वाले लाभांश में अच्छी खासी बढ़ोतरी होने की उम्मीद है। वित्त वर्ष 2022-23 में सरकार ने आरबीआई और सार्वजनिक क्षेत्र के वित्तीय संस्थानों से 40,953 करोड़ रुपये जुटाए थे। उच्च कर संग्रह के अलावा बैंकों और वित्तीय संस्थानों से मिलने वाले अधिक लाभांश से सरकार को राजकोषीय घाटे को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी। सरकार अगले वित्त वर्ष में राजकोषीय घाटे को जीडीपी के 5.4 प्रतिशत पर लाने का लक्ष्य लेकर चल रही है।

हांगकांग की अदालत ने China Evergrande को बंद करने का आदेश दिया

हांगकांग की अदालत ने चीन की सबसे बड़ी रियल एस्टेट कंपनी China Evergrande Group को बंद करने के आदेश दिए हैं। कंपनी पर 300 बिलियन डॉलर से अधिक की देनदारी है। कंपनी पिछले दो साल से अपनी देनदारियां चुकाने के प्रयास में नाकाम रही है। हांगकांग की अदालत के इस आदेश ने चीन में रियल एस्टेट और कंपनी के निवेशकों को जबरदस्त झटका दिया है।

हांगकांग। हांगकांग की एक अदालत ने सोमवार को प्रोपर्टी की दिग्गज कंपनी China Evergrande Group को बंद करने के आदेश दिए हैं। इस आदेश के बाद से चीन में निवेशकों को जबरदस्त झटका लगा है। कंपनी पर 300 बिलियन डॉलर से अधिक की देनदारी है। कंपनी पिछले दो साल से अधिक समय से अपनी देनदारी को खत्म करने में असफल रही है, जिसके बाद जस्टिस लिंडा चैन ने यह आदेश जारी किया है।

क्या चीन में मान्य होगा फैसला ?

समाचार एजेंसी रॉयटर्स के मुताबिक, सोमवार को जस्टिस चैन ने अदालत में कहा,

नई इंश्योरेंस कंपनी आईआरडीआई की वेबसाइट की मदद से आपके पॉलिसी से जुड़ी डिटेल्स (जैसे- क्लेम हिस्ट्री, मेडिकल रिकॉर्ड्स आदि) जान सकती है।

बता दें कि अगर कंपनी को यह सभी जानकारी नहीं मिलती है तो वह हेल्थ इंश्योरेंस पोर्टेबिलिटी को होल्ड पर रख सकती है। इंश्योरेंस कंपनी को जैसे ही आपके जरूरी डॉक्यूमेंट्स मिल जाते हैं वह 15 दिन के अंदर आपके पोर्टेबिलिटी रिकवेस्ट को एक्सेप्ट या रिजेक्ट होने की सूचना दे देगी।

ये डॉक्यूमेंट्स है जरूरी

हेल्थ इंश्योरेंस रिन्यू का नोटिस नो क्लेम बोनस का सर्टिफिकेट अगर कोई क्लेम किया है तो उसकी डिस्चार्ज समरी फॉलो-अप रिपोर्ट मेडिकल हिस्ट्री, रिपोर्ट और कॉपी

क्या-क्या होता है पोर्ट

पॉलिसी खरीदने के बाद का 30 दिन का वेंटिंग पीरियड ट्रांसफर हो जाता है पुरानी बीमारियों के लिए वेंटिंग पीरियड पोर्ट होता है कोई खास बीमारी के लिए वेंटिंग पीरियड भी ट्रांसफर हो जाता है पुरानी पॉलिसी का नो क्लेम बोनस भी पोर्ट होता है।

तीसरी बड़ी इकोनमी बनने का मूल आधार होगा अदाणी समूह, अमेरिकी ब्रोकरेज हाउस ने किया दावा



दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश और 2030 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की महत्वाकांक्षा रखा है। इस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए भारत को अपने ऊर्जा उत्पादन को बढ़ाने के अलावा, डिजिटल

और भौतिक बुनियादी ढांचे दोनों में निवेश करना होगा।

उत्पादकता बढ़ाने की जरूरत

कंपनी ने कहा कि यह निवेश भारत के लिए उत्पादकता वृद्धि को बढ़ाने के लिए जरूरी है,

क्योंकि वर्तमान में भारत में प्रति व्यक्ति जीडीपी 2,250 डॉलर है जबकि चीन में यह आंकड़ा 12,556 डॉलर है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत जो कुछ भी हासिल करना चाहता है कि उसके मूल में अदाणी एंटरप्राइजेज लिमिटेड

है। कैटर ने कहा कि अदाणी एंटरप्राइजेज एक ऐसी कंपनी है जिसके बारे में बहुत कम बात होती है। उन्होंने कहा, 'हमारा मानना ​​है कि देश को अदाणी की उतनी ही जरूरत है, जितनी अदाणी को देश की है।'

